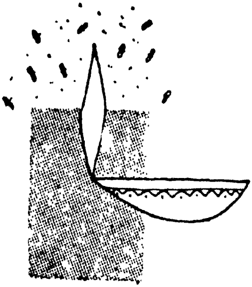
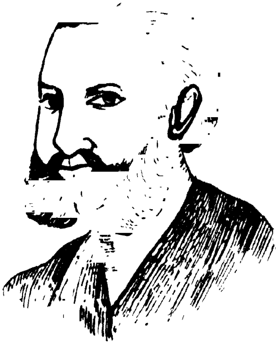


मो० तक़ी
मीर



और उनकी शायरी

सम्पादक
सरस्वतीसरन 'कैफ़'

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

प्रथम संस्करण
अक्तूबर १९५८

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

सहल है 'मीर' का समझना क्या
हर सुख़न उसका इक मुक़ाम से है

जीवनी



पढ़ते फिरेंगे गलियों में इन रेख़्तों को लोग।
मुद्दत रहेंगी याद ये बातें हमारियां॥

'मीर' ने तो शायद यह शेर कवि-सुलभ आत्माभिमान की दृष्टि से कहा हो किन्तु यह बात पूर्णतः सच निकली है। 'मीर' के ज़माने को लगभग २०० वर्ष हो गये। ज़बान बदल गयी, अभिव्यक्ति का ढंग बदल गया, काव्य-रुचि बदल गयी किन्तु 'मीर' जैसे अपने ज़माने में लोक-प्रिय थे वैसे ही आज भी हैं। कोई ज़माना ऐसा नहीं गुज़रा जब कि उस्तादों ने 'मीर' का लोहा न माना हो। उनके प्रतिद्वंद्वी 'सौदा' ने भी, जो निन्दात्मक-काव्य के बादशाह समझे जाते हैं और जिनकी कभी-कभी 'मीर' से शायराना चोटें भी चल जाती थीं, 'मीर' की खुले शब्दों में प्रशंसा की है :—

'सौदा' तू इस ज़मीं में ग़ज़ल-दर-ग़ज़ल ही लिख।
होना है तुझको 'मीर' से उस्ताद की तरफ़॥

उर्दू भाषा की सबसे अधिक साज-संवार करने वाले उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध के लखनवी उस्ताद 'नासिख़' का मिसरा है :—

आप बे-बहरा है जो मोतक़दे-'मीर' नहीं।

'ग़ालिब' ने भी 'नासिख़ का हवाला देकर उनके विचार की पुष्टि की है :—

'ग़ालिब' अपना तो अक़ीदा है ब-क़ौले-'नासिख़' ।
आप बे-बहरा है जो मोतक़दे-'मीर' नहीं ॥

'ज़ौक़' का शेर है :—

न हुआ पर न हुआ 'मीर' का अंदाज़ नसीब ।
'ज़ौक़' यारों ने बहुत ज़ोर ग़ज़ल में मारा ॥

उन्नीसवीं सदी के अंत में 'अकबर' इलाहाबादी ने लिखा:—

मैं हूँ क्या चीज़ जो इस तर्ज़ पे जाऊं 'अकबर' ।
'नासिख़ो'-'ज़ौक़' भी जब चल न सके 'मीर' के साथ ॥

बीसवीं सदी के ईसुल-मुतग़ज़्ज़लीन (ग़ज़ल रचयिताओं के नायक) मौलाना 'हसरत' मोहानी लिखते हैं :—

शेर मेरे भी हैं पुर-दर्द वलेकिन 'हसरत' ।
'मीर' का शेवाए-गुफ़्तार कहां से लाऊं ॥

'दाग़' के शागिर्द नाखुदाए-सुखन जनाब 'नूह' नारवी का मिसरा है :—

बड़ी मुश्किल से तक़लीदे-जनाबे-'मीर' होती है ।

और ख़ुद 'मीर' कहते हैं :—

मुझको शायर न कहो 'मीर' कि साहब मैंने ।
दर्दो-ग़म जमा किये कितने तो दीवान किया ॥

दरअस्ल 'मीर' की स्थायी सफलता का रहस्य यही है कि उन्होंने अपनी दुख की संवेदना को इतना मुखर कर दिया था

कि उनके सीधे-सादे शब्द भी हर ज़माने में बड़े-बड़े काव्य-मर्मज्ञों को प्रभावित करते रहे हैं। भाग्य ने उनके व्यक्तिगत जीवन और उनके समय की सामाजिक परिस्थितियों को स्थिरता और आराम-चैन से इतना अलग कर दिया था कि 'मीर' का हृदय एक टूटा हुआ खंडहर बन गया और उसमें से दर्दो-ग़म की ऐसी तानें निकलीं जिन्होंने 'मीर' को कविता के क्षेत्र में अमरत्व प्रदान कर दिया।

यह ध्यान देने की बात है कि 'मीर' के समकालीन और काव्य-क्षेत्र में उन्हीं की-सी हैसियत रखने वाले मिर्ज़ा 'सौदा' की काव्य-रचना अपनी चमक-दमक के लिए प्रसिद्ध थी। इनके पूर्ववर्ती उस्तादों के यहां भी सीधी-सादी प्रेम-भावनाओं का वर्णन है। उनके बाद के ज़माने में भी शोख़ी और चंचलता उर्दू-शायरी का दामन छोड़ती नहीं दिखाई देती। लेकिन 'मीर' ने अपना करुणा का रंग सबसे अलग निकाला और इस प्रभाव के साथ अपनी बात कही कि सदियों तक लोगों के दिलों में गड़ी रहेगी। अपने इस रंग के बारे में उनका आत्मविश्वास बहुत बढ़ा-चढ़ा था और वे गम्भीरता को छोड़कर चंचलता का सहारा लेना पसन्द न करते थे। इस मामले में ख़ुद जाकर किसी पर आपत्ति नहीं की, लेकिन जिन चंचलता के पृष्ठ-पोषक कवियों ने इनसे प्रोत्साहन चाहा उन्हें फटकार ही मिली। लखनऊ में थे तो उनके मकान पर मुशायरा हुआ करता था। उसमें एक दिन 'जुर्रत' ने, जो नयी उठान के चंचलता-प्रिय कवि थे, अपनी ग़ज़ल पढ़ी जिसकी तत्कालीन रुचि के मुताबिक़ ख़ूब तारीफ़ हुई। 'मीर' चुपचाप बैठे रहे। 'जुर्रत' को मुशायरे

में मिली प्रशंसा काफ़ी न मालूम हुई तो 'मीर' साहब के पास आकर बैठ गये और अपनी ग़ज़ल के बारे में उनकी राय जाननी चाही। 'मीर' साहब ने टालमटोल करनी चाही, लेकिन शामत के मारे 'जुर्रत' पीछे पड़ गये। 'मीर' साहब त्योरी चढ़ा कर बोले, "कैफ़ीयत इसकी यह है कि तुम शेर तो कहना नहीं जानते हो, अपनी चूमाचाटी कह लिया करो।"

इसी तरह सआदत यार ख़ां 'रंगीं' जो रेख़्ती (ज़नानी बोली की लगभग अश्लील कविता) के जन्मदाता कहे जाते हैं, शायरी के शौक़ में 'मीर' साहब के पास गये। 'मीर' साहब का बुढ़ापा था और 'रंगीं' चौदह-पंद्रह बरस के, उस पर अमीरज़ादे। निहायत शानो-शौकत से पहुँचे। 'मीर' साहब उनका रंगढंग देखकर ही समझ गये कि कितने पानी में हैं। ग़ज़ल सुनकर उन्होंने कहा, "साहबज़ादे! आप ख़ुद अमीर हैं, अमीरज़ादे हैं। नेज़ाबाज़ी, तीर-अन्दाज़ी की कसरत कीजिए, शहसवारी की मश्क़ फ़रमाइए। शायरी दिलख़राशी और जिगर-सोज़ी का काम है, आप इसके दर पे न हों।" सआदत यार ख़ाँ इस पर भी न माने और ग़ज़ल की इस्लाह पर ज़ोर दिया। अब 'मीर' साहब ने कह दिया, "आपकी तबीयत इस फ़न के मुनासिब नहीं, यह आपको नहीं आने का। ख़ामख़ाह मेरे और अपने औक़ात ज़ाया करना क्या ज़रूरी है?"

शेख़ इमाम बख़्श 'नासिख़' के साथ भी यही क़िस्सा हुआ था, उन्हें भी 'मीर' ने शागिर्द बनाने से इन्कार कर दिया था।

इन घटनाओं से यह स्पष्ट है कि 'मीर' शायरी को सिर्फ़ मन-बहलाव की चीज़ नहीं समझते थे, बल्कि उसे अपने जीवन

का महत्वपूर्ण बल्कि सबसे महत्वपूर्ण अंग मानते थे और दूसरों से भी ऐसी ही आशा करते थे।

संक्षिप्त जीवन-चरित्र—

'मीर' ने अपना जीवन-चरित्र स्वयं ही 'ज़िक्रे-मीर' नामक एक फ़ारसी पुस्तक में लिख दिया है। यह पुस्तक बहुत दिनों तक अप्राप्य थी लेकिन कुछ वर्ष पहले अंजुमने-तरक़्क़ी-ए-उर्दू के मन्त्री डा० अब्दुल हक़ ने इसकी खोज करके इसे प्रकाशित करवा दिया है जिससे काल-निरूपण तथा तथ्यों की विश्वसनीयता में बड़ी मदद मिली है। 'मीर' के बुज़ुर्ग हिजाज़ (अरब का एक प्रदेश) से भारत आये थे। पहले वे हैदराबाद गये, वहां से अहमदाबाद और फिर 'मीर' के प्रपितामह ने आगरे में (जो तत्कालीन राजधानी थी) आकर दम लिया। उनका कुछ ही दिन बाद देहांत हो गया। 'मीर' के पितामह आगरे में फ़ौजदार हो गये। इनके दो बेटे थे। बड़े का दिमाग़ ख़राब था और वह जवान ही मर गया। छोटे मीर अली मुत्तक़ी सूफ़ी फ़क़ीर हो गये। उनके तीन लड़के थे। पहली स्त्री से मुहम्मद हसन और दूसरी से मुहम्मद तक़ी और मुहम्मद रज़ी। यही मंझले पुत्र तक़ी बाद में उर्दू काव्य-गगन के सूर्य बनकर चमके।

जन्म के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं मालूम हुआ कि किस सन में पैदा हुए। 'ज़िक्रे-मीर' में भी इसका कोई उल्लेख नहीं है। लेकिन और घटनाओं के समय इन्होंने अपनी जो उम्र बताई है उससे हिसाब लगाने पर इनकी जन्म-तिथि ११३७

हि० या १७२४ ई० निकलती है। दस-ग्यारह वर्ष ही के थे कि बाप का साया सर से उठ गया। सौतेले बड़े भाई मुहम्मद हसन दुनियादार थे और मीर तक़ी से जलते भी थे। उन्होंने बाप की सम्पत्ति पर तो अधिकार कर लिया और क़र्ज़ का भुगतान इस बच्चे के ऊपर छोड़ दिया। लेकिन मीर तक़ी में स्वाभिमान बचपन ही से था। उन्होंने किसी से सहायता की याचना नहीं की। किन्तु एक दैवी सहायता यह मिली कि इनके पिता के एक अभिन्न मित्र के मुरीद (शिष्य) सय्यद मुकम्मलख़ां ने अपने गुरु और मीर के पिता के मैत्री-सम्बंधों का ख़याल करके उनके पास ५०० रुपये की एक हुंडी भेज दी। इन्होंने उसमें से ३०० क़र्ज़ख़्वाहों को देकर जान छुड़ाई और छोटे भाई को घर छोड़कर नौकरी की तलाश में दिल्ली चले गये। वहां कुछ दिन भटकते रहे। संयोग से अमीर-उल-उमरा नवाब समसामुद्दौला के भतीजे ख़्वाजा मुहम्मद बासित को मीर पर दया आई। उन्होंने मीर को नवाब के सामने पहुंचा दिया। नवाब इनके बाप अली मुत्तक़ी को जानते थे। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर बहुत अफ़सोस किया और मीर के गुज़ारे के लिए एक रुपया रोज़ मुक़र्रर कर दिया।

लेकिन मीर की क़िस्मत में चैन से रहना न था। चार-पांच वर्ष के बाद नादिरशाह ने दिल्ली पर हमला कर दिया। नवाब समसामुद्दौला इसमें मारे गये। मीर सहारा टूटने पर आगरा आये लेकिन फिर कुछ दिनों बाद दिल्ली पहुंचे और अपने सौतेले भाई के मामा ख़ान आरज़ू के पास रहने लगे। कुछ दिनों उनसे कुछ विद्या लाभ किया। (ख़ान आरज़ू उस

ज़माने के प्रथम श्रेणी के कवियों में से थे)। लेकिन फिर वे उनसे नाराज़ हो गये। मीर का कहना है कि सौतेले भाई की शिकायत पर ख़ान आरज़ू उनसे बिगड़े थे। किन्तु यह बात समझ में नहीं आती। ख़ान आरज़ू बच्चे नहीं थे जो किसी के शिकायत कर देने-भर से मीर से इतने बिगड़ जाते कि खाने के समय भी उन्हें सख़्त सुस्त कहते। कुछ लोग इसका कारण यह बताते हैं कि वे ख़ान आरज़ू की पुत्री से प्रेम करने लगे थे। यह प्रेम इतना बढ़ा कि उन्होंने सबसे मिलना-जुलना छोड़ दिया और एक कोठरी में पड़े रहते। इसी हालत में उन्हें उन्माद हो गया और चन्द्रमा में अपनी प्रेमिका की सूरत नज़र आने लगी। उन्माद को मीर साहब भी मंजूर करते हैं किन्तु उसका कारण ख़ान आरज़ू का दुर्व्यवहार बताते हैं। ख़ैर, कुछ भी हो, उन्माद रोग तो उन्हें हो ही गया था। अंत में उनकी हालत पर फ़ख़रुद्दीन ख़ां नामक एक सज्जन को तरस आया और उन्होंने बड़े-बड़े हकीमों से इलाज कराके 'मीर' को चंगा कर दिया।

ख़ान आरज़ू की ओर से तो इनकी पूरी उपेक्षा थी लेकिन संयोग से इन्हें पहले मीर जाफ़र और उनके बाद सय्यद सआदत अली अमरोही का साथ मिल गया। दोनों बुज़ुर्ग बड़े विद्या-प्रेमी थे और उन्होंने मीर को बहुत कुछ सिखाया। सय्यद सआदत अली खां ने ही मीर को काव्य-रचना करने की राय दी और मीर ने कुछ ही समय में मुशायरों में अपना रंग जमा लिया। लेकिन ख़ान आरज़ू से इनकी बिगड़ती गई। एक दिन खाना खाते समय ही ख़ान आरज़ू ने इनसे इतनी कड़ी बातें कह दीं कि वे बग़ैर खाना खाये उठ गये और ख़ान आरज़ू के

घर से निकल गये। संयोग से हौज़ क़ाज़ी पर इन्हें अली मुल्ला नामक एक आदमी मिला जिसने इन्हें रियायत ख़ां रईस के पास पहुंचा दिया। ये रियायत ख़ां के नौकर हो गये। इसके बाद वे कई रईसों के पास रहे। इसका कारण कुछ तो उनकी नाज़ुक-मिज़ाजी और कुछ उस अस्थिरता के ज़माने में रईसों की बिगड़ी हुई हालत थी।

रियायत ख़ां के यहाँ से किसी बात पर बिगड़कर अलग हुए तो नवाब बहादुर के मुसाहिब हो गये। नवाब बहादुर मारे गये तो वे दीवान महानारायण के यहां चले गये। फिर दो-तीन महीने बेकारी की हालत में इलाहाबाद के सूबेदार अमीर ख़ां 'अंजाम' की हवेली में काटे। इसके बाद उन्हें बंगाल के वकील राजा जुगल किशोर ने अपनी कविताओं के संशोधन के लिए अपने यहां रख लिया और सिफ़ारिश करके राजा नागर मल के दरबार में रखवा दिया। यहां मीर साहब का वेतन अधिक था और वे कुछ अधिक दिन यहां रहे। लेकिन रोज़ाना की लूट-मार से परेशान होकर कुंभेर में सूरज मल जाट के दरबार में रहने लगे। बहुत दिन यहां रहने के बाद वे एक बार अकबराबाद (आगरा) होते हुए फिर दिल्ली पहुंचे और फिर राजा नागर मल के यहां रहने लगे। जाटों की लूट-मार से परेशान होकर नागर मल कामां चले गये। मीर साहब भी उनके साथ वहां गये और फिर जब राजनीतिक उथल-पुथल के कारण नागर मल फिर दिल्ली आये तो उनके साथ मीर साहब भी दिल्ली आ गये। लेकिन अब उन्होंने नागर मल की नौकरी छोड़ दी थी। मशहूर इस अर्से में काफ़ी

हो ही गये थे इसलिये कुछ दिनों तत्कालीन बादशाह आलमगीर द्वितीय के साथ रहे। बादशाह ने जब ज़ाब्ता खां पर आक्रमण किया तो मीर भी उसके साथ थे। इतने लड़ाई-झगड़े देखने के बाद मीर साहब अपने घर बैठ गये। रईस और अमीर-उमरा घर बैठे उनकी कुछ मदद कर दिया करते थे, बादशाह भी कुछ भेज दिया करता था, लेकिन इनका जी दिल्ली से उचाट हो गया था और चाहते थे कि कहीं इत्मीनान से रहना नसीब हो। दिल्ली के बादशाह ने कई बार इन्हें अपने दरबार में बुलाया मगर ये न गये। बरसों दिल्ली की मार-काट और बरबादी देखकर इनका जी काफ़ी थक चुका था।

'मीर' साहब की दिल्ली छोड़ने की इच्छा को सुनकर अवध के तत्कालीन नवाब आसफ़-उद्दौला ने उन्हें बुलाना चाहा और नवाब सालार जंग के सुझाव पर मार्ग-व्यय भी भेज दिया। मीर तुरन्त अकेले ही लखनऊ को चल दिये। रास्ते में फ़रुखाबाद के रईस मुज़फ़्फ़र जंग ने उन्हें कुछ दिनों के लिए रोकना चाहा लेकिन मीर साहब न रुके। लखनऊ आकर सीधे सालार जंग के मकान पर पहुँचे। (लखनऊ आने के लिए नवाब की ओर से 'मीर' साहब को सालार जंग ही ने पत्र लिखा था)। सालार जंग ने अतिथि-सत्कार में कोई कसर न छोड़ी और आसफ़-उद्दौला को 'मीर' साहब के आगमन की सूचना पहुँचाई। लेकिन नवाबी ज़माना, हर काम को आराम और इत्मीनान से करने की आदत। 'मीर' साहब की नवाब से चार पाँच दिन बाद भेंट भी हुई तो उस समय जबकि वे मुर्ग़ों की लड़ाई देखने आये हुए थे। नवाब साहब ने इन्हें अंदाज़े ही से

पूछा कि क्या तुम मीर तक़ी हो ? यह मालूम होने पर कि यही मीर हैं नवाब उनसे गले मिले और अपने पास बिठा लिया। नवाब ने वहां पर उन्हें अपने कुछ शेर सुनाये जिनकी इन्होंने तारीफ़ की। फिर इनसे कुछ सुना। चलने लगे तो सालार जंग ने कहा कि इन्हें आपने बुलाया था, अब इनके लिए कुछ हो जाना चाहिए। नवाब ने कहा कि मैं सोचकर बताऊँगा। दो-तीन दिन बाद मीर दरबार में बुलाये गये। नवाब साहब ने कृपा की और उन्हें अपने मुसाहिबों में दाख़िल कर लिया।

अब 'मीर' साहब को अपने संघर्षमय जीवन से छुटकारा मिला और सुख का जीवन बिताने लगे। रुपये-पैसे की भी दिक़्क़त न रही और सम्मान भी प्राप्त हुआ। नवाब आसफ़-उद्दौला शिकार के लिए बहराइच गये तो 'मीर' साहब भी घोड़े पर सवार उनके साथ थे। उन्होंने इस पर शिकारनामा लिखा। दूसरी बार नवाब साहब शिकार के लिए हिमालय की तलहटी तक गये। इस अवसर पर 'मीर' ने दूसरा शिकारनामा लिखा। दूसरे शिकारनामे की दो ग़ज़लों पर मिसरे जोड़कर नवाब ने मुख़म्मस बनाये थे।

लखनऊ ही में 'मीर' ने अपना जीवन-चरित्र 'ज़िक्रे-मीर' लिखा। उस समय उनकी अवस्था लगभग साठ वर्ष की थी। इसमें उन्होंने अपने निजी जीवन की घटनाओं के साथ ही अपने ज़माने की राजनीतिक उथल-पुथल (बल्कि अराजकता की स्थिति) का विस्तार-पूर्वक उल्लेख किया है। विभिन्न दरबारों और रईसों से सम्बन्धित रहने और सारी राजनीतिक

हलचलों को अपनी आंखों से देखने के कारण उनके लिए यह संभव भी हो सका।

यद्यपि 'ज़िक्रे-मीर' लिखते समय ही उन्होंने लिख दिया था कि शक्ति के ह्रास तथा मस्तिष्क और हृदय की दुर्बलता से ऐसा जान पड़ता है कि अधिक जीवित न रहूँगा, और समय भी रहने योग्य नहीं है, इतनी ही इच्छा है कि आराम से अंत हो; तथापि इसके बाद भी वे उन्तीस-तीस वर्ष तक जीवित रहे थे। उनकी मृत्यु की तिथि 'नासिख़' द्वारा कही गई तारीख़ "वावेला मुर्द शहे-शायरां" से १२२५ हिजरी या १८१० ईसवी निकलती है और इसके बारे में कोई मतभेद नहीं है। जन्म-तिथि के बारे में उन्होंने कुछ नहीं लिखा। कुछ लोगों का कहना है कि उन्होंने १०० वर्ष की आयु भोगी। लेकिन 'ज़िक्रे-मीर' की समाप्ति का समय उसी में दी हुई तारीख़ के अनुसार ११९७ हिजरी है और उसमें उन्होंने अपनी अवस्था ६० वर्ष की लिखी है। इसलिए अनुमान किया गया है कि उनकी जन्म-तिथि ११३७ हिजरी या १७२४ ईसवी होगी। इस प्रकार उनकी कुल आयु हिजरी हिसाब से ८८ वर्ष और ईसवी हिसाब से ८६ वर्ष की निकलती है।

उनके वंश के बारे में भी कुछ मतभेद है। 'तज़करा-ए-शोरिश' में लिखा है कि 'मीर' सैयद न थे। लेकिन 'ज़िक्रे-मीर' से और 'मीर' द्वारा रचित कई शेरों से मालूम होता है कि वे अपने को एलानिया सय्यद कहते थे। धार्मिक विश्वास के लिहाज़ से शिया थे। और कुछ लोगों का कहना है कि ख़ान आरज़ू के सुन्नी होने के कारण इनका उनसे झगड़ा रहता था। किन्तु

अधिकतर लोगों को यह बात मंज़ूर नहीं है।

व्यक्तित्व और स्वभाव

मीर साहब के आख़िरी ज़माने का हुलिया मौलाना मुहम्मद हुसैन आज़ाद इन शब्दों में बयान करते हैं : "मीर साहब मियाना क़द, लाग़र-अंदाम (दुबले-पतले), गंदुमी (गेहुआँ) रंग थे। हर काम मतानत (धैर्य) और आहिस्तगी के साथ। बात बहुत कम, वह भी आहिस्ता। आवाज़ में नरमी और मुलाइमियत। ज़ईफ़ी ने इन सब सिफ़तों को और भी क़वी किया (बढ़ाया) था।"

मीर साहब की नाज़ुक-मिज़ाजी और क्रोधी स्वभाव के क़िस्से बहुत मशहूर हुए हैं। सआदत यार ख़ाँ 'रंगी' और 'जुर्रत' के साथ पेश आने वाले मामलों को हम पहले ही लिख चुके हैं। लेकिन 'मीर' की बद-दिमाग़ी सिर्फ़ अपने से छोटों या बराबर वालों ही तक सीमित न थी। मिज़ाज बिगड़ने पर वे अपने आश्रयदाताओं तक को खरी-खोटी सुनाने से न चूकते थे। जुगल किशोर ने उनके साथ इतना सलूक किया। फिर भी मीर साहब को उन्होंने अपनी ग़ज़लें दिखाईं तो उन्होंने सब काटकर फेंक दीं। राजा साहब के सलूक इसके बाद भी उनके साथ रहे। नवाब आसफ़-उद्दौला का दबदबा बड़ा मशहूर था, लेकिन मीर साहब उनसे बिल्कुल बराबरी की हैसियत से बात करते। एक बार वे नवाब के पास बैठे हुए थे। दोनों के बीच में एक किताब रखी हुई थी। नवाब साहब ने कहा "मीर साहब! ज़रा यह किताब उठा दीजिए।" मीर साहब ने

किताब उठाकर देने में भी अपनी बेइज़्ज़ती समझी और चोबदार से कहा "देखो तुम्हारे आक़ा क्या कहते हैं।" नवाब बेचारे इतने अप्रतिभ हुए कि ख़ुद बढ़कर किताब उठा ली।

नवाब आसफ़-उद्दौला के मरने पर नवाब सआदत अली ख़ां का राज हुआ। मीर साहब ने दरबार जाना छोड़ दिया। वहां से भी बुलावा न आया। एक दिन नवाब की सवारी निकल रही थी। यह तहसीन की मसजिद में बैठे हुए थे। सवारी आने पर सब उठ खड़े हुए, लेकिन यह बैठे रहे। नवाब ने अपने मुसाहिबों से पूछा कि यह कौन है। मालूम हुआ 'मीर' हैं। नवाब ने वापस आकर चोबदार के हाथों ख़िलअत और एक हज़ार रुपया भेजा। मीर साहब ने उसे वापस कर दिया। नवाब को और आश्चर्य हुआ और उन्होंने सय्यद 'इंशा' को भेजा। पूछने पर मीर साहब ने कहा कि पहले तो नवाब साहब मुझे भूले रहे और अब याद भी किया तो इस तरह कि दस रुपये के नौकर के हाथ ख़िलअत भेजा। वह अपने मुल्क के बादशाह हैं तो मैं अपने मुल्क का। मुझे भूखों मर जाना मंजूर है लेकिन यह बेइज़्ज़ती नहीं मंज़ूर।" बहर-हाल इंशा उन्हें समझा-बुझाकर किसी तरह दरबार ले गये। नवाब साहब ने उनकी बेहद ख़ातिर की और आख़िर तक करते रहे।

हम लोगों की एक बड़ी भारी कमज़ोरी यह है कि हम गुण-अवगुण को अपनी ठीक जगह रख कर नहीं देख पाते। हमें जो प्यारा है उसकी बुराइयां भी प्यारी और जिससे हमारा मतभेद है उसकी अच्छाइयां भी बुरीं। 'मीर' के इस व्यवहार को—जिसे अभद्रता के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता—

हमारे आलोचकगण 'आत्म-सम्मान' कहते हैं। जिस मुहल्ले में दो-चार व्यक्ति भी इतना आत्म-सम्मान रखने वाले हों वहाँ कम-से-कम मेरे लिए तो दो-चार दिन रहना भी मुसीबत हो जाय। 'मीर' में निस्संदेह आत्म-सम्मान बहुत था (हम आगे इसके भी उदाहरण देंगे), लेकिन जब आत्म-सम्मान अपनी हद से बढ़कर दूसरों का अपमान करने में परिणत हो जाता है तो उसे अविनय और अभद्रता कहते हैं। 'मीर' की मनोवृत्ति निस्संदेह इसी कोटि की थी।

कुछ आलोचकों ने मीर के इस कटु व्यवहार का कारण उनके जीवन में पड़ने वाली कठिनाइयों और संघर्षों को बताया है। अपनी बात के सबूत में वे 'मीर' साहब ही का बंद पेश करते हैं :—

हालत तो यह कि मुझको ग़मों से नहीं फ़राग़
दिल सोज़िशे - दरूनी से जलता है ज्यूं चिराग़
सीना तमाम चाक है सारा जिगर है दाग़
है मजलिसों में नाम मेरा 'मीरे'-बेदिमाग़
अज़बस कि कम-दिमाग़ी ने पाया है इश्तहार।

लेकिन 'मीर' साहब के अपने कहे के अनुसार हम उनके बारे में राय कैसे बना सकते हैं? तटस्थ रूप से देखने पर दिखाई देता है कि 'मीर' पर बचपन और जवानी के दिनों में ज़रूर मुसीबतें पड़ीं लेकिन प्रौढ़ावस्था और बुढ़ापे में उन्हें बहुत सुख और सम्मान मिला। जिन लोगों के साथ ऐसा होता है वे साधारणतः दूसरों के प्रति और अधिक सहानुभूति रखने

वाले, मृदु-भाषी और गंभीर हो जाते हैं। 'मीर' की कटुता उनके अंत समय तक न गई। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इसका एक ही कारण हो सकता है। वह यह कि 'मीर' प्रेम के मामले में हमेशा असफल रहे और जीवन के इस बड़े भारी अभाव ने उनके अवचेतन मस्तिष्क में घर करके उनमें असाधारण अहम्मन्यता और कटुता भर दी। उन्हें एक बार उन्माद भी हुआ था। उससे वे अच्छे हो गये लेकिन यह असंभव नहीं है कि दवाओं की प्रतिक्रिया ने उनके मिज़ाज में असाधारण रूप से गर्मी भर दी हो। वरना यह समझ में नहीं आता कि सूफ़ी फ़क़ीर का बेटा, जिसे शुरू ही से विश्व के कण-कण से प्रेम करने की शिक्षा दी गयी हो, इतनी कटुता का बोझ ज़िन्दगी भर किस तरह ढोता रहा।

मालूम होता है कि 'मीर' को शुरू के कटु अनुभवों और उसके बाद असफल प्रेम का मानसिक झटका लगने से साधारण जनों की सदाशयता ही में नहीं उनकी समझ पर भी अविश्वास हो गया था। वे किसी और मनुष्य को अपना प्रेम न दे सके और इसकी पूर्ति उन्होंने बिल्ली, कुत्ता, बकरी, मुर्ग़ा आदि पालकर और उन पर अपना सारा प्रेम उँडेल कर की। इन जानवरों पर उन्होंने कई नज़्में लिखी हैं। आलोचकगण कहते हैं कि 'मीर' साहब ने यह ख़ुराफ़ात लिखकर अपनी प्रतिष्ठा कम की है। वे बेचारे नहीं जानते कि इन्हीं जानवरों की मुहब्बत ने 'मीर' साहब को ज़िन्दा रखा, वरना उन जैसा संवेदनशील आदमी प्रेम के नितान्त अभाव में ज़िन्दा ही नहीं रह सकता था।

समाज से 'मीर' साहब को कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं दिखाई देती। वे इस समाज से ऊबे हुए थे। चाहते थे कि लोग जितनी चाहें उतनी मूर्खता करते रहें, बस उनसे कोई छेड़-छाड़ न करें। फ़िज़ूल का मिलना-जुलना उन्हें पसंद नहीं था। ज़बर्दस्ती मेल बढ़ाने वालों को—और ज़बर्दस्ती मेल बढ़ाने वाले हमेशा विचारों से शून्य व्यक्ति होते ही हैं—वे अक्सर दुत्कार दिया करते थे। अपनी धुन में मस्त रहते थे। एक दिन इसी हालत में मीर साहब टहल रहे थे और यह मिसरा गुनगुना रहे थे "अब के भी दिन बहार के यूंही गुज़र गये।" एक साहब मिलने गये, सलाम किया, बैठे रहे और उठ कर चले भी आये। मीर साहब ने ध्यान भी न दिया कि कौन आया था, क्यों आया था, और कब चला गया।

फिर मीर साहब का मानदंड भी इतना ऊंचा था कि ख़ुदा की पनाह। लखनऊ में किसी ने पूछा कि आपकी नज़र में कौन-कौन शायर हैं। कहने लगे, "दो। एक सौदा और दूसरा मैं।" कुछ देर ठहर कर बोले, "और आधे ख्वाजा मीर दर्द।" पूछने वाले ने कहा "और मीर सोज़?" भवें टेढ़ी करके बोले, "मीर सोज़ भी शायर हैं?" उसने कहा, "आख़िर नवाब आसफ़-उद्दौला के उस्ताद हैं।", बोले, "ख़ैर, तो पौने-तीन सही।"

वे चाहते थे कि सत्पात्र ही उनसे काव्य-चर्चा करें और उस ज़माने के फ़ैशन के अनुसार हर व्यक्ति काव्य-चर्चा करता था। इससे उन्हें चिढ़ होती थी। अंगरेज़ हाकिम, यहां तक कि गवर्नर-जनरल तक, लखनऊ आने पर इन्हें बुलाते थे, लेकिन

ये उनसे मिलने कभी न जाते थे। कहते थे, "मुझसे जो कोई मिलता है तो या मुझ फ़क़ीर के ख़ानदान के ख़याल से या मेरे कलाम के सबब से मिलता है। साहब को ख़ानदान से ग़रज़ नहीं, मेरा कलाम समझते नहीं। अलबत्ता कुछ इनाम देंगे। ऐसी मुलाक़ात में ज़िल्लत के सिवा क्या हासिल ?"

लेकिन सत्पात्र से वे खुले दिल से मिलते भी थे। शाद अज़ीमाबादी 'नवाए-वतन' में लिखते हैं :

"जब शैख़ रासिख़ उनसे मिलने गये तो 'मीर' ने कहला भेजा 'मियां, क्यों सताने आये हो ?' शैख़ साहब ने ठीकरी पर यह शेर लिखकर भेजा :

ख़ाक हूं पर तूतिया हूं चश्मे-मेहरो-माह का।
आंख वाला रुत्बा समझे मुझ ग़ुबारे-राह का॥

"मीर साहब फ़ौरन घर से निकल आये, गले लगाया और कहा, 'मिज़ाज मुबारक ! कहां से आये हो ? क्यों मुझ ग़रीब को सरफ़राज़ किया ?"

प्रौढ़ावस्था आने पर शेरो-शायरी के अलावा किसी बात से कोई संबंध न रखते थे। एक नवाब साहब उन्हें अपने यहां रहने को ले गये और ऐसा मकान दिया जिसकी खिड़कियां एक बाग़ की तरफ़ खुलती थीं। संयोग से 'मीर' साहब जिस दिन आये खिड़कियां बंद थीं। मीर साहब ने उन्हें खोला भी नहीं और कई बरसों तक उन्हें पता भी न चला कि इधर बाग़ भी है। एक बार एक मित्र ने बताया तो उन्हें मालूम हुआ। मित्र ने इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया कि बरसों से उन्हें बाग़

का पता भी नहीं है तो अपनी ग़ज़लों के मसविदों की तरफ़ इशारा करके बोले, "मैं तो इस बाग़ की फ़िक्र में ऐसा लगा हूं कि उस बाग़ की ख़बर भी नहीं ।"

'मीर' साहब का आत्माभिमान आरंभ में अभिमान और उद्दंडता की सरहदें छू लेता था । दिल्ली में एक मुशायरे में उन्होंने एक मसनवी 'अज़धर-नामा' पढ़ी जिसमें उन्होंने अपने को अजगर और दूसरे कवियों में किसी को चूहा, किसी को बिच्छू, किसी को कनखजूरा आदि के रूपक में पेश करके अपने को उनसे कहीं बड़ा साबित करने की कोशिश की । इसके कारण उनके पीछे और कवि पड़ गये और उनकी बड़ी मिट्टी पलीद हुई । इसी स्वाभिमान के अतिरेक में वे 'सौदा' और उस ज़माने के एक दूसरे शायर 'बक़ा' से भिड़ जाते थे । यह दोनों निंदा-काव्य के विशेषज्ञ थे । फलस्वरूप उनकी ख़ूब धज्जियां इन लोगों ने उड़ायीं और ऐसे ऐसे शेर लिखे गये :

पगड़ी अपनी संभालिएगा 'मीर' ।
और बस्ती नहीं, ये दिल्ली है ।।

लेकिन बाद में उनके मिज़ाज में गंभीरता भी दिखाई देती है । अपनी पुस्तक 'नुकातुश्शोअ़रा' में उन्होंने पुराने और समकालीन कवियों की अच्छी-ख़ासी प्रशंसा की है, अपनी ग़ज़लों के शेरों में 'सौदा' की प्रशंसा भी की है । हां, अपात्र का अपने साथ मिलना जुलना उन्होंने अंत समय तक बर्दाश्त नहीं किया और यह असहिष्णुता इस हद तक बढ़ी हुई थी कि उसे उनकी विशेष परिस्थितियों की दृष्टि से क्षम्य तो कहा जा सकता है किन्तु श्लाघ्य नहीं ।

'मीर' का काव्य

डा० एजाज़ हुसैन ने 'मीर' की कला की व्याख्या निम्नलिखित थोड़े से शब्दों में कर दी है—"मीर की सबसे बड़ी खूबी यह है कि वे सीधे-सादे शब्दों में अपने भाव व्यक्त करते हैं जिससे उनकी कविता बड़ी प्रभावोत्पादक हो जाती है। वे करुणा के कवि हैं। करुणा का प्रभाव भारी-भरकम शब्दों और पेचीले ढंग से बात करने में उतना नहीं पड़ता जितना साफ़ और सीधे शब्दों में।"

स्वर्गीय डा० अमरनाथ झा लिखते हैं, "उनकी शैली उन महाकवियों की है जो बग़ैर प्रयास के शानदार शैली अपना लेते हैं। वे अपनी सरलता में अत्युच्च हैं। (उनकी रचनाएं पढ़ते समय) हम प्राचीन ढंग की अभिव्यक्ति को भूल जाते हैं, अप्रचलित मुहावरों पर ध्यान नहीं देते, और उनके विचार या शब्द-चित्र पर, जो शब्द-चमत्कार से अवरुद्ध या धुंधला पाड़ नहीं होता है, हमारा ध्यान केन्द्रित हो जाता है।"

उपर्युक्त दोनों महान आलोचकों के कथन के बाद 'मीर' के काव्य की विशिष्टता के बारे में कुछ कहना नहीं रह जाता है। दर-असल 'मीर' का काव्य व्याख्या करने की चीज़ नहीं, अनुभव करने की चीज़ है। उनका मुख्य विषय दुख और करुणा है। इन दोनों की व्याख्या करने की ज़रूरत नहीं है। कौन ऐसा है जिसे जीवन में कुछ न कुछ ये अनुभूतियां न हुई हों। लेकिन जिस सफलता से 'मीर' ने इन भावों का चित्रण किया है वह औरों के बस का रोग नहीं है। उनके हर शेर से, हर

मिसरे से, हर शब्द और शब्दों की तरतीब से करुणा की तानें उठती हैं। इसलिए उनके शेर पढ़िए और उनकी कसक का आनंद लीजिए। मुख्य पुस्तक में तो ये शेर मिलेंगे ही, यहां भी नमूने के तौर पर दो-चार शेर दिये जाते हैं जिन से 'मीर' की तबीयत का अंदाज़ा हो जाएगा :

हम 'मीर' तेरा मरना क्या चाहते थे लेकिन
रहता है हुए बिन कब जो कुछ कि हुआ चाहे

◇ ◇ ◇

अहदे-जवानी रो-रो काटा, पीरी में लीं आँखें मूंद
यानी रात बहुत जागे थे, सुबह हुई आराम किया

◇ ◇ ◇

यूं उठे आह उस गली से हम
जैसे कोई जहाँ से उठता है

◇ ◇ ◇

करो तवक्कुल कि आशिक़ी में न यूं करोगे तो क्या करोगे
जो यह अलम है तो दर्दमंदो ! कहां तलक तुम दवा करोगे

◇ ◇ ◇

सिरहाने 'मीर' के कोई न बोलो
अभी टुक रोते-रोते सो गया है

◇ ◇ ◇

कहता था किसू से कुछ तकता था किसू का मुंह
कल 'मीर' खड़ा था यां सच है कि दिवाना था

◇ ◇ ◇

आंखें पथराईं, छाती पत्थर है
वह ही जाने जो इंतज़ार करे

शुद्ध करुणा के अतिरिक्त 'मीर' के यहां कुछ और भी विषय हैं, यथा तसव्वुफ़ (सूफ़ी दर्शन), प्रेमी का आत्म-विश्वास, और कुछ फूहड़ विषय भी। लेकिन ये सब उनके मुख्य विषय —दुख और करुणा—से इतने दब गये हैं कि उनकी व्याख्या करना व्यावहारिक दृष्टि से बेकार है।

'मीर' की भाषा—'मीर' की भाषा के बारे में भी दो शब्द कह देने ज़रूरी हैं। 'मीर' के ज़माने की उर्दू आज की उर्दू से कुछ भिन्न थी। व्याकरण की दृष्टि से क्रियाओं के बहुवचन आज से कुछ भिन्न दिखाई देते हैं, जैसे आतीं-जातीं की बजाय आतियां-जातियां। अक्सर जगह 'ने' का प्रयोग उड़ा दिया जाता था, जैसे "इक रोग मैं बिसाहा जी को कहां लगाया।" कुछ शब्दों के लिंग-भेद में भी आज से अंतर है, जैसे 'जान' को पुल्लिग करके प्रयोग करना—"जान अपना जो हमने मारा था।" 'ने' के पहले 'उन्हों' की बजाय 'उन' का प्रयोग वे धड़ल्ले से करते हैं—"तेज़ पंजा किया न उनने कभू।" 'पास' के पहले 'के' का प्रयोग ज़रूरी नहीं था, जैसे "था कुत्ते का बच्चा इक दरवेश पास।" इसी तरह के कुछ और प्रयोग हैं जो 'मीर' के ज़माने की भाषा में पाये जाते हैं लेकिन आजकल निषिद्ध हैं।

व्याकरण के प्रयोगों में भिन्नता के साथ ही उस ज़माने में कुछ शब्द बहुत अधिक प्रचलित थे जो आज प्रयोग में नहीं लाये जाते, जैसे 'ज़रा' की बजाय 'टुक', 'पास' की बजाय 'कने', 'आ' की जगह 'आन', 'किसी' की बजाय 'किसू', 'कभी' की बजाय 'कभू', 'को' की बजाय 'तईं' और इसी तरह के बीसियों दूसरे

शब्द हैं जिनका चलन 'मीर' के ज़माने में बहुतात से होता था।

अट्ठारहवीं शताब्दी की उर्दू में हिन्दी शब्दों का प्रयोग बहुतात से मिलता है। उर्दू के पहले प्रमुख कवि वली के ज़माने (सत्रहवीं शताब्दी के अंत) में तो प्रियतम के लिए 'साजन', 'मोहन' आदि का भी प्रयोग होता था जो 'मीर' के ज़माने में छोड़ दिया गया, फिर भी 'मीर' के ज़माने में सैकड़ों हिन्दी शब्द ऐसे प्रयुक्त होते थे जिन्हें बाद में उर्दू में छोड़ दिया गया। खास तौर से 'मीर' ने अपनी करुणा की अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी के कोमल शब्दों को डटकर प्रयुक्त किया है। 'कुढब', 'दोष', 'नगर', 'बचन', 'अचपल', 'बासन', 'बान', 'भसम', 'जोग', 'सुमरन', 'निपट', 'संसार', 'गुन', 'स्वर', 'अनमना' आदि सैकड़ों शब्द हैं जिन्हें 'मीर' ने अपने समकालीन कवियों की अपेक्षा भी अधिक प्रयोग किया है और बड़ा सफल प्रयोग किया है।

'मीर' भावों के क्षेत्र में तो अपनी मिसाल आप हैं ही, साथ ही भाषा के बनाने में भी उन्होंने काफ़ी योग दिया। पुराने प्रयोगों को उन्होंने बहुत कुछ काटाछाँटा और नये प्रयोग भी किये। इनमें एक प्रयोग फ़ारसी मुहावरों को उर्दू में अनूदित करके लेने की कोशिश भी है। उदाहरण के लिए फ़ारसी में 'बू करदन' सूंघने को कहते हैं। 'मीर' ने इसे 'बास करना' की सूरत में ले लिया। उनका शेर है :

गुल को महबूब हम क़यास किया
फ़र्क़ निकला बहुत जो बास किया

इसी तरह फ़ारसी का एक मुहावरा है 'तू गोई'। इसका इस्तेमाल बात में ज़ोर पैदा करने के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग इसी तरह होता है जैसे हम लोग कहते हैं 'समझे आप ?' मीर ने 'तू गोई' को 'तू कहे' या 'कहे तू' करके लेने की कोशिश की है। उदाहरणार्थ यह शेर देखिए :

अब कोफ़्त से हिजरां की जहां दिल पे रखा हाथ
जो दर्दो-अलम था सो कहे तू कि यहीं था

इसमें कोई शक नहीं कि 'मीर' के इन प्रयोगों में से बहुत से प्रयोग बाद में असफल सिद्ध हुए, फिर भी भाषा के विकास की दृष्टि से इन प्रयोगों का बहुत बड़ा महत्त्व है।

इसके साथ ही 'मीर' ने उर्दू के स्थानीयकरण का भरसक प्रयास किया। उनकी मसनवियों आदि में तो स्थानीय कथाएं स्थानीय रंग में दिखाई ही देती हैं, ग़ज़लों में भी, जिनमें स्थानीयकरण की ज़्यादा गुंजाइश नहीं होती है, उन्होंने भारतीय कथाओं आदि का सहारा (अपने ढंग से) लेने की कोशिश की। उदाहरणार्थ निम्नलिखित शेर देखिए :—

आतिशे-इश्क़ ने रावन को जलाकर मारा
गर्चे लंका सा था उस देव का घर पानी में

◇ ◇ ◇

सुब्हे-चमन का जल्वा हिन्दी बुतों में देखा
संदल भरी जबीं है होंटों की लालियां हैं

'मीर' चाहते थे कि भारतीय आधार-भूमि में ईरानी ढंग को अपनाकर एक स्वस्थ स्थानीय साहित्य की रचना की जाय। एक शेर में कहते हैं :—

तबईयत में फ़ारसी के जो मैंने हिन्दी शेर कहे
सारे तुरुक बचे ज़ालिम अब पढ़ते हैं ईरान के बीच

उर्दू के विकास ने बाद में अट्ठारहवीं शताब्दी में जो फ़ारसीकरण की राह पकड़ी उसने 'मीर' के इन सत्प्रयत्नों को लगभग बेकार-सा कर दिया, लेकिन आज की स्थिति में यह देखना मुश्किल नहीं है कि मीर की राह ही सही राह थी।

मीर की रचनाएं—मीर ने लम्बी ज़िन्दगी पाई और सारी ज़िन्दगी काव्य-साधना के अतिरिक्त और कुछ भी न किया। फल-स्वरूप उनकी रचनाओं की संख्या और मात्रा बहुत अधिक है। नीचे इनका कुछ परिचय दिया जाता है :

(१) मीर के कुल्लियात में ६ बड़े-बड़े दीवान ग़ज़लों के हैं। इनमें कुल मिलाकर १८३९ ग़ज़लें (लगभग चौदह हज़ार शेर) और ८३ फुटकर शेर हैं। इनके अलावा आठ क़सीदे, ३१ मसनवियाँ, कई हजवें (निंदात्मक कविताएं), १०३ रुबाइयां, तीन शिकारनामे आदि बहुत-सी कविताएं हैं। कुछ वासोख़्त (उपालंभ-काव्य) भी हैं। इस कुल्लियात का आकार बहुत बड़ा है।

(२) इसके अतिरिक्त एक दीवान फ़ारसी का है जो दुर्भाग्य-वश अभी तक अप्रकाशित है।

(३) कई मर्सिए भी लिखे हैं जो अपने ढंग के अनूठे हैं।

(४) एक पुस्तक फ़ारसी में 'फ़ैज़े-मीर' के नाम से लिखी है। इसमें अंत में कुछ हास्य-प्रसंग और कहानियाँ हैं। इनमें कुछ काफ़ी अश्लील हैं और इनसे तत्कालीन समाज की रुचि का अनुमान किया जा सकता है।

(५) फ़ारसी ही में उर्दू शायरों की एक परिचय-पुस्तक 'नुकातुश्शोअ़रा' है जिसमें अपने पूर्ववर्ती और समकालीन कवियों का उल्लेख किया है।

(६) आत्म-चरित 'ज़िक्रे-मीर' फ़ारसी में लिखा है। इस में अपने साहित्य पर प्रकाश नहीं डाला है बल्कि अपने निजी जीवन की घटनाओं के साथ ही तत्कालीन राजनीतिक उथल-पुथल और लड़ाइयों का उल्लेख है। इस पुस्तक का इतिहास के दृष्टिकोण से भी महत्व है।

फ़ारसी दीवान को छोड़कर उपर्युक्त सभी पुस्तकें प्रकाशित हो गई हैं। किन्तु सामान्यतः इस समय भारत के बाज़ारों में प्राप्य नहीं हैं। यहाँ तक कि उर्दू कुल्लियात भी पुस्तकालयों के अलावा कहीं देखने को नहीं मिलता। अब मालूम हुआ है कि लखनऊ का (राजा) राम कुमार भार्गव प्रेस कुल्लियात को फिर से छपाने का प्रबंध कर रहा है। उर्दू के महानतम कवि की रचनाओं की यह दशा दुख का विषय है।

चयन



पहला दीवान

था मुस्तआ़र[1] हुस्न से उसके जो नूर था
ख़ुर्शीद[2] में भी उसका ही ज़र्रा[3] ज़हूर[4] था
पहुंचा जो आप[5] को तो मैं पहुंचा ख़ुदा के तईं
मालूम यह हुआ कि बहुत मैं भी दूर था
कल पाँव एक कासा-ए-सर[6] पर जो आ गया
यकसर वो उस्तख़्वान[7] शिकस्तों[8] से चूर था
कहने लगा कि देख के चल राह, बेख़बर!
मैं भी कभू किसू का सरे - पुर - ग़रूर था
था वह तो रश्के - हूरे - बहिश्ती[9] हमीं में 'मीर'
समझे न हम तो फ़हम[10] का अपनी क़सूर था।

◇ ◇ ◇

उल्टी हो गयीं सब तदबीरें कुछ न दवा ने काम किया
देखा इस बीमारी-ए-दिल ने आख़िर काम तमाम किया
अ़हदे-जवानी[11] रो-रो काटा पीरी[12] में लीं आंखें मूंद
यानी रात बहुत जागे थे सुबह हुई आराम किया
नाहक़ हम मजबूरों पर यह तोहमत है मुख़्तारी[13] की
चाहते हैं सो आप करें हैं हमको अ़बस[14] बदनाम किया

१. उधार लिया हुआ २. सूर्य ३. किंचित ४. प्रकट होना ५. स्वयं ६. खोपड़ी ७. हड्डी ८. चोटों ९. हूर को लजाने वाला प्रियतम (ईश्वर) १०. समझ ११. यौवन-काल १२. बुढ़ापा १३. स्वतन्त्रता १४. बेकार

यां के सफ़ेदो-स्याह में हमको दख़्ल जो है सो इतना ही
रात को रो-रो सुबह किया और दिन को ज्यूं त्यूं शाम किया
'मीर' के दीनो-मज़हब को अब पूछते क्या हो उन ने तो
क़श्क़ा[१] खेंचा दैर[२] में बैठा कब का तर्क[3] इस्लाम किया

◇ ◇ ◇

जिस सर को ग़रूर आज है यां ताजवरी[४] का
कल उस पे यहीं शोर है फिर नौहागरी[५] का
आफ़ाक़[६] की मंज़िल से गया कौन सलामत
असबाब लुटा राह में यां हर सफ़री[७] का
ले सांस भी आहिस्ता कि नाज़ुक है बहुत काम
आफ़ाक़ की इस कारगहे - शीशागरी[८] का
टुक 'मीरे'-जिगर-सोख़्ता[९] की जल्द ख़बर ले
क्या यार भरोसा है चिराग़े - सहरी[१०] का

◇ ◇ ◇

मुंह तका ही करे है जिस-तिस का
हैरती[११] है ये आईना किस का
शाम से कुछ बुझा-सा रहता है
दिल हुआ है चिराग़ मुफ़लिस[१२] का
ताब[१३] किसको जो हाले-'मीर' सुने
हाल ही और कुछ है मजलिस का

◇ ◇ ◇

---

१. तिलक २. मंदिर ३. छोड़ना ४. बादशाहत ५. रोना-पीटना ६. संसार ७. यात्री ८. शीशे का कारखाना ९. दिल-जला 'मीर' १०. सुबह का दिया ११. मग्न, प्रेमी १२. निर्धन १३. ताक़त

जब जुनूं से हमें तवस्सुल[1] था
अपनी ज़ंजीर-पाई[2] का ग़ुल था
बिस्तरा था चमन में ज्यूं बुलबुल
नाला सरमाया-ए-तवक्कुल[3] था
इक निगह् को वफ़ा न की, गोया
मौसमे-गुल[4] सफ़ीरे-बुलबुल[5] था
अब तो दिल को न ताब है न क़रार
यादे-अय्याम[6] जब तहम्मुल[7] था
ख़ूब दरयाफ़्त जो किया हमने
वक़्ते-ख़ुश[8] 'मीर' नगहते-गुल[9] था

◇ ◇ ◇

हमारे आगे तेरा जब किसूने नाम लिया
दिले-सितमज़दा को[10] हमने थाम-थाम लिया
ख़राब रहते थे मसजिद के आगे मैख़ाने
निगाहे-मस्त ने साक़ी की इन्तक़ाम[11] लिया
मेरे सलीक़े से मेरी निभी मुहब्बत में
तमाम उम्र मैं नाकामियों[12] से काम लिया
अगर्चे गोशा-गुज़ीं[13] हूं मैं शायरों में 'मीर'
पे मेरे शोर ने रूए-ज़मीं[14] तमाम लिया

◇ ◇ ◇

१. सम्बन्ध २. पाँव में ज़ंजीर होना ३. संतोष की पूँजी ४. बहार ५. बुलबुल का दूत ६. (उन) दिनों की याद (आती है) ७. सहनशीलता ८. अच्छा समय ९. फूल की ख़ुशबू १०. सताए हुए हृदय को ११. बदला १२. असफलताओं १३. एकांत-वासी १४. पृथ्वीतल

मेह्र[1] की तुझसे तवक़्क़ो[2] थी, सितमगर निकला
मोम समझे तेरे दिल को सो पत्थर निकला
जीते जी, आह, तेरे कूचे से कोई न फिरा
जो सितम-दीदा[3] रहा जाके सो मर कर निकला
दिल की आबादी की इस हद है खराबी कि न पूछ
जाना जाता है कि इस राह से लश्कर निकला

◇ ◇ ◇

आलम में कोई दिल का तलबगार न पाया।
इस जिंस का यां हमने ख़रीदार न पाया
हक़[4] ढूंढने का आपको आता नहीं वरना
आलम है सभी यार कहां यार न पाया
सूराख है सीने में हर इक शख़्स के तुझ से
किस दिल के तेरा तीरे-निगह पार न पाया
आईना भी हैरत से मुहब्बत की हुए हम
पर सेर[5] हो उस शख़्स का दीदार न पाया
वह खैंच के शमशीरे-सितम रह गया जो 'मीर'
खूंरेज़ी[6] का यां कोई सज़ावार[7] न पाया

◇ ◇ ◇

दिल के तईं आतिशे-हिजरां[8] से बचाया न गया
घर जला सामने और हम से बुझाया न गया

---

१. कृपा २. आशा ३. दुखी ४. अधिकार ५. जी भर कर ६. खून बहाना ७. पात्र ८. विरहाग्नि

क्या तुनुक-हौसला[1] थी दीदा-ए-दिल[2] अपनी, आह !
एक दम राज़ मुहब्बत का छुपाया न गया
दिल जो दीदार के क़ातिल का बहुत भूखा था
उस सितम-कुश्ता[3] से इक ज़ख़्म भी खाया न गया

◇ ◇ ◇

गुल ने हरचंद कहा बाग़ में रह, पर उस बिन
जी जो उचटा तो किसू तरह लगाया न गया
'मीर' मत उज्र[4] गरेबां के फटे रहने का कर
ज़ख़्मे-दिल, चाके-जिगर[5] था कि सिलाया न गया ?

◇ ◇ ◇

बारहा[6] गोर[7] दिल झंका लाया
अबकी शर्ते-वफ़ा बजा लाया
क़द्र रखती न थी मताअ़-ए-दिल[8]
सारे आ़लम में मैं दिखा लाया
दिल कि इक क़तरा ख़ूं नहीं है बेश
एक आ़लम के सर बला लाया
इब्तदा[9] ही में मर गये सब यार
इश्क़ की कौन इन्तहा[10] लाया
अब तो जाते हैं बुतकदे[11] से 'मीर'
फिर मिलेंगे अगर ख़ुदा लाया

१. कम हौसले की २. हृदय की आंख ३. पीड़ित ४. बहाना ५. कलेजे का छेद ६. कई बार ७. क़ब्र ८. हृदय-रूपी पूंजी ९. प्रारंभ १०. अंत ११. मंदिर

कब तलक यह सितम उठाइएगा ?
एक दिन यूं ही जी से जाइएगा
शक्ले-तस्वीरे-बेखुदी[1] कब तक ?
किसू दिन आप[2] में भी आइएगा ?
सब से मिल चल कि हादसे[3] से फिर
कहीं ढूंढा भी तो न पाइएगा
कहिएगा उससे क़िस्सा-ए-मजनूं
यानी परदे में ग़म सुनाइएगा
शरकते-शैखो-बरहमन[4] से 'मीर'
काबा-ओ-दैर[5] से भी जाइएगा

◇ ◇ ◇

ग़म रहा जब तक कि दम में दम रहा
दिल के जाने का निहायत ग़म रहा
दिल न पहुँचा गोशा-ए-दामां[6] तलक
क़तरा-ए-खूं था मिज़ा[7] पर जम रहा
जामा-ए-एहरामे-ज़ाहिद[8] पर न जा
था हरम[9] में लेक[10] नामहरम[11] रहा
मेरे रोने की हक़ीक़त जिसमें थी
एक मुद्दत तक वो काग़ज़ नम रहा

◇ ◇ ◇

१. आत्म-विस्मृति की तस्वीर बने हुए २. अपने ३. संयोग ४. शैख और ब्राह्मण को साथ लेना ५. काबा और मंदिर ६. दामन का कोना ७. पलक ८. कर्मकांडी मुसलमानों द्वारा काबे में पहना जाने वाला बग़ैर सिला पवित्र वस्त्र ९. काबा १०. किन्तु ११. (ईश्वरीय रहस्य से) अनभिज्ञ

सुबहे-पीरी शाम होने आयी 'मीर'
तू न चेता यां बहुत दिन कम रहा

◇ ◇ ◇

जो इस शोर से 'मीर' रोता रहेगा
तो हमसाया[1] काहे को सोता रहेगा
मुझे काम रोने से अक्सर है, नासह[2]
तू कब तक मेरे मुंह को धोता रहेगा
बस ऐ गिरिया[3] आंखें तेरे क्या नहीं हैं
तू कब तक जहां को डुबोता रहेगा
मेरे दिल ने वह नाला[4] पैदा किया है
जरस[5] के भी जो होश खोता रहेगा
बस ऐ 'मीर' मिज़गां[6] से पोंछ आंसुओं को
तू कब तक ये मोती पिरोता रहेगा

◇ ◇ ◇

किसकी मसजिद ? कैसे मैखाने ? कहां के शैखो-शाब[7]?
एक गर्दिश में तेरी चश्मे-सियह[8] की सब खराब
मूंद रखना चश्म[9] का हस्ती में ऐने-दीद[10] है
कुछ नहीं आता नज़र जब आंख खोले है हुबाब[11]
मत ढलक मिज़गां[12] से अब तू ऐ सरश्के-आबदार[13]
मुफ़्त में जाती रहेगी तेरी मोती की-सी आब

---

१. पड़ोसी २. उपदेश देने वाला ३. रुदन ४. चीख ५. घंटा ६. पलकों ७. धार्मिक लोग ८. काली आंख ९. आंख १०. ठीक देखना ११. बुलबुला १२. पलक १३. पानीदार आंसू

कुछ नहीं, बहरे-जहां[१] की मौज[२] पर मत भूल 'मीर'
दूर से दरिया नज़र आता है लेकिन है सुराब[३]

◇ ◇ ◇

मेरे संगे - मज़ार[४] पर फ़रहाद
रख के तेशा कहे है 'या उस्ताद !'
फ़िक्रे-तामीर[५] में न रह मुनअ्म[६]
ज़िन्दगानी की कुछ भी है बुनियाद
सुनते हो टुक सुनो कि फिर मुझ बाद
न सुनोगे ये नाला-ओ-फ़रियाद
तेरी क़ैदे-क़फ़स का क्या शिकवा
नाले अपने से, अपने से फ़रियाद
नहीं सूरत-पज़ीर[७] नक़्श[८] उसका
यूं ही तसदीअ्[९] खेंचे है बहज़ाद[१०]

◇ ◇ ◇

ग़ैरों से मिल चले तुम मस्ते-शराब होकर
ग़ैरत से रह गये हम यकसू[११] कबाब होकर
परदा रहेगा क्योंकर ख़ुर्शीदे-ख़ावरी[१२] का
निकले है सुबह वह भी अब बेनक़ाब होकर
कल रात मुँद गयी थी बहुतों की आंखें ग़श से
देखा किया न कर तू सरमस्ते-ख़्वाब[१३] होकर

१. संसार-सागर २. लहर ३. मृग-मरीचिका ४. क़ब्र का पत्थर ५. निर्माण की चिन्ता ६. धनी ७. साकार होने वाला ८. रूप-रेखा ९. बेकार मेहनत १०. एक प्राचीन नामी चित्रकार ११. एकदम १२. सूर्य १३. नींद का माता

इक क़तरा आब[१] मैंने इस दौर में पिया है
निकला है चश्मे-तर[२] से वह ख़ूने-नाब[३] होकर
आ बैठता था सूफ़ी हर सुबह मैकदे[४] में
शुक्रे-ख़ुदा कि निकला वाँ से ख़राब होकर
शर्मो-हया कहाँ तक, हैं 'मीर' कोई दम के
अब तो मिला करो तुम टुक बेहिजाब[५] होकर

◇ ◇ ◇

हैं बाद मेरे मर्ग[६] के आसार से[७] अब तक
सूखा नहीं लोहू दरो-दीवार से अब तक
रंगीनी-ए-इश्क़ उसके मिले पर हुई मालूम
सोहबत न हुई थी किसी ख़ूंख़्वार से अब तक
मुद्दत हुई घुट-घुट के हमें शहर में मरते
वाक़िफ़ न हुआ कोई इस असरार[८] से अब तक
बरसों हुए दिल-सोख़्ता[९] बुलबुल को मुए[१०] लेक[११]
इक दूद[१२] सा उठता है चमन-ज़ार[१३] से अब तक
देखा था कहीं साया तेरे क़द का चमन में
हैं 'मीर' जी आवारा परीदार[१४] से अब तक

◇ ◇ ◇

सोज़िशे-दिल[१५] से मुफ़्त गलते हैं
दाग़ जैसे चिराग़ जलते हैं

१. पानी २. भीगी आंख ३. शुद्ध रक्त ४. शराब-ख़ाना ५. बेपरदा ६. मौत ७. चिह्न-से ८. भेद ९. दुखी १०. मरे ११. लेकिन १२. धुआं १३. बाग़ १४. जिस पर परी का साया पड़ा हो १५. दिल का जलना

इस तरह दिल गया कि हम अब तक
बैठे रोते हैं हाथ मलते हैं
भरी आती हैं आज यूं आँखें
जैसे दरिया कहीं उबलते हैं
दमे-आख़िर[1] है बैठ जा, मत जा
सब्र कर टुक कि हम भी चलते हैं
तेरे बेख़ुद[2] जो हैं सो क्या चेतें
ऐसे डूबे कहीं उछलते हैं ?
'मीर' साहब को देखिए जो बने
अब बहुत घर से कम निकलते हैं

◇ ◇ ◇

जिनके लिए अपने तो यूं जान निकलते हैं
इस राह में वे जैसे अनजान निकलते हैं
मत सहल हमें जानो फिरता है फ़लक[3] बरसों
तब ख़ाक के परदे से इन्सान निकलते हैं
किसका है क़िमाश[4] ऐसा गूदड़ भरे हैं सारे
देखो न जो लोगों के दीवान निकलते हैं
इन आईना-रूयों[5] के क्या 'मीर' भी आशिक़ हैं
जब घर से निकलते हैं हैरान निकलते हैं

◇ ◇ ◇

१. अन्त समय २. आत्म-विस्मृत प्रेमी ३. आसमान ४. ढंग
५. दर्पण जैसे (निर्मल) चेहरों वाले

जफ़ाएं देख लियां बेवफ़ाइयां देखीं
भला हुआ कि तेरी सब बुराइयां देखीं
तेरे विसाल[1] के हम शौक़ में हो आवारा
अज़ीज़ दोस्त सभों की जुदाइयां देखीं
शहां[2] कि कुहले-जवाहर[3] थी ख़ाके-पा[4] जिनकी
उन्हीं की आंखों में फिरती सलाइयां[5] देखीं
बनी न अपनी तो उस जंगजू[6] से अपनी 'मीर'
लड़ाई जब से हम आँखें, लड़ाइयां देखीं

◇ ◇ ◇

कर नालाकशी[7] कब तईं[8] औक़ात[9] गुज़ारें
फ़रियाद करें किस से, कहां जाके पुकारें
दिल में जो कभी जोशे-ग़म उठता है तो तादेर[10]
आंखों से चली जाती हैं दरिया की सी धारें
जिस जगह ख़सो-ख़ार[11] के अब ढेर लगे हैं
यां हमने इन्हीं आंखों से देखी हैं बहारें
मंज़ूर है कब से सरे-शोरीदा का देना
बढ़ जाय नज़र कोई तो यह बोझ उतारें
नाचार हो रुख़सत जो मंगा भेजी तो बोला
मैं क्या करूं, जो 'मीर' जी जाते हैं, सिधारें

◇ ◇ ◇

१. मिलन २. बादशाह लोग ३. जवाहर का सुरमा ४. चरण-रज ५. आंखों का फोड़ा जाना (संभवत: इसमें शाह आलम की गुलाम क़ादिर रुहेले द्वारा आंखें फोड़े जाने की ओर संकेत है) ६. लड़ाकू (प्रियतम) ७. रोना ८. तक ९. समय १०. देर तक ११. घास-फूस

आरज़ूएं हज़ार रखते हैं
तो भी हम दिल को मार रखते हैं
बर्क़[1] कम-हौसला है, हम भी तो
दिलके - बेक़रार[2] रखते हैं
न निगह, ने[3] पयाम, ने वादा
नाम को हम भी यार रखते हैं
हम से ख़ुश-ज़मज़मा[4] कहां, यूं तो
लबो-लहजा[5] हज़ार[6] रखते हैं
चोट्टे दिल के हैं बुतां मशहूर
बस यही एतबार रखते हैं
फिर भी करते हैं 'मीर' साहब इश्क़
हैं जवां, इख़्तियार रखते हैं

◇ ◇ ◇

शैख़ जी आओ मुसल्ला[7] गिरवे-जाम[8] करो
जिन्से तक़वा[9] के तईं[10] सर्फ़े-मै-ओ-जाम[11] करो
नेकनामी व तक़ावत[12] को दुआ जल्द कहो
दीनो - दिल पेशकशे - सादाए - ख़ुदकाम करो
सायाए-गुल[13] में लबे-जू[14] पे गुलाबी[15] रक्खो
हाथ में जाम को लो, आपको बदनाम करो

१. बिजली २. बेचैन दिल ३. न ४. अच्छा गाने वाले ५. अच्छी आवाज ६. हज़ारों लोग या बुलबुल (हज़ार दास्तां) ७. वह कपड़ा जिस पर नमाज पढ़ी जाती है ८. शराब के लिए गिरवी रखना ९. धार्मिकता की पूंजी १०. को ११. शराब के लिए खर्च १२. पवित्रता १३. फूलों के साये में १४. नहर के किनारे १५. सुराही

रात तो सारी कटी सुनते परीशां - गोई[१]
'मीर' जी कोई घड़ी तुम भी तो आराम करो

◇ ◇ ◇

हम हैं मजरूह[२] माजरा है यह
वह नमक छिड़के है मज़ा है यह
आगे थे इब्तदाए-इश्क़[३] में हम
अब जो हैं ख़ाक इन्तहा[४] है यह
बूंदे - आदम[५] नमूदे - शबनम[६] है
एक दो दम में फिर हवा है यह
शुक्र उसकी जफ़ा का हो न सका
दिल से अपने हमें गिला[७] है यह
मैं तो चुप हूँ, वो होंट चाटे है
क्या कहूँ रीझने की जा[८] है यह
'मीर' को क्यों न मुग़तनम[९] जानें
अगले लोगों में इक रहा है यह

◇ ◇ ◇

ज़िंदगी होती[१०] है अपनी ग़म के मारे देखिए
मूंद लीं आंखें इधर से तुमने प्यारे देखिए
राहे-दूरे-इश्क़ में अब तो रखा हमने क़दम
रफ़्ता-रफ़्ता पेश क्या आता है बारे देखिए

---

१. बेकार बातें २. घायल ३. प्रेम का आरम्भ ४. अंत ५. मानव का अस्तित्व ६. ओस का प्रकट होना ७. शिकायत ८. जगह ९. ग़नीमत १०. खत्म होती

खंजरे-बेदाद[1] को क्या देखते हो दमबदम
चश्म[2] से इंसाफ़ की सीने हमारे देखिए
एक ख़ूं हो बह गया, दो रोते ही रोते गये
दीदा-ओ-दिल[3] हो गये हैं सब किनारे देखिए
रह गये सोते के सोते क़ाफ़िला जाता रहा
हम तो 'मीर' इस रह के ख़्वाबीदा[4] हैं बारे देखिए

◇ ◇ ◇

हस्ती अपनी हुबाब[5] की सी है
यह नुमाइश सुराब[6] की सी है
नाज़ुकी उसके लब[7] की क्या कहिए
पंखड़ी इक गुलाब की सी है
बार-बार उसके दर पे जाता हूं
हालत अब इज़्तराब[8] की सी है
मैं जो बोला, कहा कि यह आवाज़
उसी ख़ाना-ख़राब[9] की सी है
'मीर' उन नीम-बाज़[10] आंखों में
सारी मस्ती शराब की सी है

◇ ◇ ◇

यारब ! कोई हो इश्क़ का बीमार न होवे
मर जाय वले[11] उसको ये आज़ार न होवे

१. अत्याचार रूपी खंजर २. आंख ३. आंखें और दिल ४. सोने वाला ५. बुलबुला ६. मृग-मरीचिका ७. होंठ ८. बेचैनी ९. अभागा १०. अधखुली ११. किन्तु

ज़िंदां[1] में फंसे, तौक़ पड़े, क़ैद में मर जाय
पर दामे-मुहब्बत[2] में गिरफ़्तार न होवे
इस वास्ते कांपूं हूँ कि है आह निपट सर्द
यह बाउ[3] कलेजे के कहीं पार न होवे
सहराए-मुहब्बत[4] है, क़दम देख के रख 'मीर'
यह सैर सरे-कूचा-ओ-बाज़ार[5] न होवे

◇ ◇ ◇

जब कि पहलू से यार उठता है
दर्द बे - इख़्तियार उठता है
अब तलक भी मज़ारे-मजनूं[6] से
नातवां[7] इक ग़ुबार उठता है
है बगूला ग़ुबार किसका 'मीर'
कि जो हो बेक़रार उड़ता है

◇ ◇ ◇

जिन-जिन को था ये इश्क़ का आज़ार मर गये
अक्सर हमारे साथ के बीमार मर गये
यूं कानों-कान गुल[8] ने न जाना चमन में आह
सर को पटक के हम पसे-दीवार[9] मर गये
सद कारवां[10] वफ़ा है कोई पूछता नहीं
गोया मताअ़ - ए - दिल[11] के ख़रीदार मर गये

१. क़ैद २. प्रेमजाल ३. वायु ४. प्रेम का जंगल ५. गलियों और बाज़ारों की सैर ६. मजनू की क़ब्र ७. अशक्त ८. फूल (प्रियतम) ९. दीवार के पीछे १०. सैकड़ों कारवानों में ११. दिल की दौलत

मजनूं न दश्त[1] में है न फ़रहाद कोह[2] में
था जिन से लुत्फ़े-ज़िन्दगी वे यार मर गये
तुझ से दो-चार होने की हसरत में मुब्तला[3]
जब जी हुए वबाल तो नाचार मर गये
घबरा न 'मीर' इश्क़ में इस सहल जीस्त[4] पर
जब बस चला न कुछ तो मेरे यार मर गये

◇ ◇ ◇

देखा करूं तुझी को मंज़ूर है तो यह है
आँखें न खोलूं तुझ बिन मक़दूर[5] है तो यह है
रोने में दिन कटे है आहो-फ़ुग़ां[6] में रातें
गर शग़ल है तो यह है मज़कूर[7] है तो यह है
चाके-जिगर[8] को मेरे बरजा[9] है जो कहो तुम
गर ज़ख्म है तो यह है नासूर है तो यह है

◇ ◇ ◇

ख़ुरशीद[10] तेरे चेहरे के आगू न आ सके
उसको जिगर भी शर्त है जो ताब ला सके
हम गर्म-रौ[11] हैं राहे-फ़ना[12] के शरर-सिफ़त[13]
ऐसे न जायेंगे कि कोई खोज पा सके
ग़ाफ़िल न रहियो आहे-ग़रीबां[14] से सरकशां[15]
ताक़त है इसको यह कि जहां को जला सके

१. जंगल २. पहाड़ ३. फंसे हुए ४. ज़िंदगी ५. क्षमता, भाग्य ६. रोना-चिल्लाना ७. ज़िक्र ८. कलेजे का छेद ९. उचित १०. सूर्य ११. यात्रा-रत १२. मिटने का रास्ता १३. चिंगारी की तरह १४. ग़रीबों की हाय १५. घमंडी लोगो

क्या करूं शरह[1] खस्ताजानी[2] की
मैंने मर मर के ज़िन्दगानी की
हाले - बद[3] गुफ़्तनी[4] नहीं मेरा
तुमने पूछा तो मेहरबानी की
तिश्ना-लब[5] मर गये तेरे आशिक़
न मिली एक बूंद पानी की
जिससे खोई थी नींद 'मीर' ने कल
इब्तदा[6] फिर वही कहानी की

◇ ○ ◇

नहीं वसवास[7] जी गंवाने के
हाय रे ज़ौक़[8] दिल लगाने के
मेरे तग़ईरे-हाल[9] पर मत जा
इत्तफ़ाक़ात हैं ज़माने के
दमे-आखिर ही क्या न आना था
और भी वक़्त थे बहाने के
इस कदूरत[10] को हम समझते हैं
ढब हैं ये खाक में मिलाने के
चश्मे - नज़्मे - सिपहर[11] झपके है
सदक़े इस अंखड़ियां लड़ाने के

---

१. व्याख्या २. अति दुख ३. बुरा हाल ४. कथनीय ५. प्यासे ६. आरंभ ७. डर ८. शौक़ ९. दुर्दशा १०. दिल का मैल ११. सितारों की आंख

दीनो-दिल होशो-सब्र सब हो गये
आगे आगे तुम्हारे आने के

◇ ◇ ◇

फ़क़ीराना[१] आये सदा[२] कर चले
मियां खुश रहो हम दुआ कर चले
शफ़ा अपनी तक़दीर ही में न थी
कि मक़दूर[३] भर तो दवा कर चले
वो क्या चीज़ है आह जिसके लिए
हर इक चीज़ से दिल उठाकर चले
कोई ना-उमेदाना[४] करते निगाह
सो तुम हमसे मुँह भी छुपाकर चले
दिखाई दिये यूं कि बेख़ुद[५] किया
हमें आपसे भी जुदा कर चले
कहें क्या जो पूछे कोई हमसे 'मीर'
जहां में तुम आये थे क्या कर चले

◇ ◇ ◇

करो तवक्कुल[६] कि आशिक़ी में न यूं करोगे तो क्या करोगे
अलम[७] जो यह है तो दर्दमंदो कहां तलक तुम दवा करोगे
अख़ीरे-उल्फ़त यही नहीं है कि जलके आख़िर हुए पतंगे
हवा जो यां की ये है तो यारो गुबार बनकर उड़ा करोगे

१. फ़क़ीरों की तरह २. आवाज़ लगाना ३. ताक़त ४. निराशा-पूर्वक ५. आत्म-विस्मृत ६. सब्र ७. दुख

बला है ऐसा तपीदने-दिल[1] कि सब्र इस पर है सख़्त मुश्किल
दिमाग़ इतना कहाँ रहेगा कि दस्त-बर-दिल[2] रहा करोगे
अदम[3] में हमको ये ग़म रहेगा कि औरों पर अब सितम रहेगा
तुम्हें तो लत है सताने ही की किसू पे आख़िर जफ़ा[4] करोगे
अगर्चे अब तो ख़फ़ा हो लेकिन मुए[5] गए पर कभू हमारे
जो याद हमको करोगे प्यारे तो हाथ अपने मला करोगे
ग़मे-मुहब्बत से 'मीर' साहब बतंग[6] हूं मैं, फ़क़ीर हो तुम
जो वक़्त होगा कभी मुसाइद[7] तो मेरे हक़ में दुआ करोगे

◇ ◇ ◇

इधर से अब्र[8] उठकर जो गया है
हमारी ख़ाक पर भी रो गया है
मुसायब[9] और थे, पर दिल का जाना
अजब इक सानहा[10] सा हो गया है
सिरहाने 'मीर' के कोई न बोलो
अभी टुक रोते-रोते सो गया है

◇ ◇ ◇

गर दिल है यही मुज़तरिबुल-हाल[11] तो ऐ 'मीर'
हम ज़ेरे-ज़मीं[12] भी बहुत आराम करेंगे !

◇ ◇ ◇

---

१. दिल का तड़पना २. दिल पर हाथ रखे ३. परलोक ४. ज़ुल्म ५. मरने ६. तंग ७. शुभ ८. बादल ९. मुसीबतें १०. दुर्घटना ११. बेचैन १२. ज़मीन के नीचे (क़ब्र में)

दूसरा दीवान

लज़्ज़त से नहीं ख़ाली जानों का खपा जाना
कब ख़िज्रो-मसीहा[1] ने जीने का मज़ा जाना
कब बंदगी[2] मेरी सी बंदा करेगा कोई
जाने है ख़ुदा उसको मैं तुझको ख़ुदा जाना
था नाज़ बहुत हमको दानिस्त[3] पर अपनी भी
आख़िर वो बुरा निकला हम जिसको भला जाना
ऐ शोरे-क़यामत[4] हम सोते ही न रह जाएं
इस राह से निकलो तो हमको भी जगा जाना
जाती है गुज़र जी पर उस वक़्त क़यामत सी
याद आवे है जब तेरा यक - बारगी आ जाना

◇ ◇ ◇

वो तुर्के-मस्त[5] किसू की ख़बर नहीं रखता
कि मैं शिकारे-ज़बूं[6] हूं, जिगर नहीं रखता
जिन्हों के दम में है तासीर और हैं वे लोग
हमारा नालाए-जांकाह[7] असर नहीं रखता
ख़ुदा की ओर से यह एतबार है वरना
जो खूब देखो तो मैं कुछ हुनर नहीं रखता

---

१. हज़रत खिज्र और ईसा मसीह अमर माने गये हैं २. उपासना ३. समझ ४. प्रलय-नाद ५. बेपरवा प्रियतम ६. कमज़ोर शिकार ७. तीव्र रुदन

जुदा जुदा फिरे है 'मीर' सब से किस ख़ातिर
ख़याल मिलने का उसके अगर नहीं रखता

◇ ◇ ◇

नागह[1] जो वह सनम[2] सितम-ईजाद[3] आ गया
देखे से तौर उसके ख़ुदा याद आ गया
फोड़ा था सर तो हमने भी पर इसको क्या करें
जो चश्मे-रोज़गार[4] में फ़रहाद आ गया
अपना भी क़स्द[5] था सरे-दीवारे-बाग़ का
तोड़ा ही था क़फ़स[6] को कि सय्याद[7] आगया
जौरो-सितम उठाने ही उसके पड़ेंगे शैख़
मसजिद में गर वो आशिक़े-बेदाद[8] आगया
देखेंगे आदमी की रविश 'मीर' हम तेरी
गर सामने से टुक वो परीज़ाद आ गया

◇ ◇ ◇

क्या कहें कुछ कहा नहीं जाता
अब तो चुप भी रहा नहीं जाता
ताक़ते-दिल तलक तअब[9] खैंचे
अब सितम तक सहा नहीं जाता
उस दुरे-तर[10] का हैरती[11] है बहर[12]
तब तो उससे बहा नहीं जाता

१. अचानक २. प्रियतम ३. निष्ठुर ४. दुनिया की आंख ५. इरादा ६. पिंजरा ७. चिड़ीमार ८. निष्ठुरता-प्रेमी (प्रियतम) ९. रंज १०. पानीदार मोती ११. प्रेम-मग्न १२. समुद्र

कब तेरी रह[१] में 'मीरे'-गर्द-ग्रालूद[२]
लोहू में ग्रा नहा नहीं जाता

◇ ◇ ◇

बंधा रात ग्रांसू का कुछ तार सा
हुग्रा ग्रब्रे-रहमत[३] गुनहगार सा
कोई सादा[४] ही उसको सादा कहे
लगे है हमें तो वो ग्रय्यार[५] सा
मुहब्बत है या कोई जी का है रोग
सदा मैं तो रहता हूं बीमार सा
जो ऐसा ही तुम हमको समझो हो सहल
हमें भी ये जीना है दुश्वार सा
मगर[६] ग्रांख तेरी भी चिपकी कहीं
टपकता है चितवन से कुछ प्यार सा
नहीं 'मीरे'-मस्ताना सोहबत का बाब[७]
मुसाहिब करो कोई हुशियार सा

◇ ◇ ◇

ऐ नुकीले ये थी कहां की ग्रदा
खुब गयी जी में तेरी बांकी ग्रदा
जादू करते हैं इक निगाह के बीच
हाय रे चश्मे - दिलबरां[८] की ग्रदा

---

१. राह २. धूलि-धूसरित 'मीर' ३. दैवी कृपा का बादल ४. मूर्ख, भोला ५. चालाक ६. शायद ७. लायक ८. प्रियतमों की ग्रांख

बात कहने में गालियां दे है
सुनते हो मेरे बदज़बां की अदा
दिल चले जायें हैं ख़राम[1] के साथ
देख चलते में इन बुतां[2] की अदा
ख़ाक में मिल के 'मीर' हम समझे
बे-अदाई थी आसमां की अदा

◇ ◇ ◇

तुझ बिन ऐ नौबहार के मानिन्द
चाक[3] है दिल अनार के मानिन्द
पहुंची शायद जिगर तक आतिशे-इश्क़
अश्क[4] हैं सब शरार[5] के मानिन्द
हार कर शब[6] गले पड़े उसके
हम भी फूलों के हार के मानिन्द
बर्क़[7] तड़पी बहुत वले[8] न हुई
इस दिले-बेक़रार के मानिन्द
उसकी सरतेज़ हर पलक है 'मीर'
खंजरे - आबदार के मानिन्द

◇ ◇ ◇

क्या इश्क़े-ख़ाना-सोज़[9] के दिल में छुपी है आग
इक सारे तन-बदन में मेरे फुंक रही है, आग

---

१. चाल २. सुन्दर लोग ३. फटा ४. आंसू ५. चिंगारी ६. रात ७. बिजली ८. किन्तु ९. बर्बाद करने वाला इश्क़

जल-जल के सब इमारते-दिल ख़ाक हो गयी
कैसे नगर को आह मुहब्बत ने दी है आग
रोज़े-अज़ल[१] से आते हैं होते जिगर कबाब
क्या आजकल से इश्क़ की यारो जली है आग
यारब हमेशा जलती ही रहती हैं छातियां
यह कैसी आशिक़ों के दिलों में रखी है आग
अफ़सुर्दगी-ए-सोख़्ता जाना है क़हर 'मीर'
दामन को टुक हिला कि दिलों की बुझी है आग

◇ ◇ ◇

है तहे-दिल[२] बुतों के क्या मालूम
निकले परदे से क्या ख़ुदा मालूम
यही जाना कि कुछ न जाना हाय
सो भी इक उम्र में हुआ मालूम
इल्म सब को है यह कि सब तू है
फिर है अल्लाह कैसा नामालूम
इश्क़ जाना था मार रक्खेगा
इब्तदा[३] में थी इन्तहा[४] मालूम
इश्क़ है ऐ तबीब[५] जी का रोग
लुत्फ़[६] कर है जो कुछ दवा मालूम
दिल बजा हो तो 'मीर' कुछ खावे
कुढ़ने पचने में इश्तहा[७] मालूम

◇ ◇ ◇

---

१. आदि दिवस २. दिल के अन्दर ३. आरंभ ४. अन्त
५. चिकित्सक ६. कृपा ७. भूख

करते हैं जो कि जी में ठाने हैं
ख़ूबरू[1] किसकी बात माने हैं
जा हमें उस गली में गिर रहना
ज़ोफ़ो - बेताक़ती[2] बहाने हैं
पूछ अहले-तरब[3] से शौक़ अपना
वे ही जानें जो ख़ाक छाने हैं
इश्क़ करते हैं उस परीरू[4] से
'मीर' साहब भी क्या दिवाने हैं

◇ ◇ ◇

फ़िराक़[5] आंख लगने की जा[6] ही नहीं
पलक से पलक आशना[7] ही नहीं
मुहब्बत जहां की तहां हो चुकी
कुछ इस रोग की है दवा ही नहीं
वो क्या कुछ नहीं हुस्न के शहर में
नहीं है तो रस्मे-वफ़ा ही नहीं
नहीं दैर[8] अगर 'मीर' काबा तो है
हमारे कोई क्या ख़ुदा ही नहीं

◇ ◇ ◇

मुहब्बत ने खोया खपाया हमें
बहुत उनने ढूंढा न पाया हमें

१. सुन्दर लोग २. कमज़ोरी ३. सुखी लोग ४. सुन्दर प्रियतम
५. विरह ६. जगह ७. परिचित ८. मंदिर

गहे[१] तर रहीं गाह[२] खूंबस्ता[३] थीं
इन आंखों ने क्या क्या दिखाया हमें
मले डाले है दिल कोई इश्क़ में
ये क्या रोग यारब लगाया हमें
जवानी दिवानी सुना क्या नहीं
हसीनों का मिलना ही भाया हमें
न समझी गयी दुश्मनी इश्क़ की
बहुत दोस्तों ने जताया हमें
कोई दम कल आयी थी मजलिस में 'मीर'
बहुत इस ग़ज़ल पर रुलाया हमें

◇ ◇ ◇

सब सरगुज़श्त[४] सुन चुके अब चुपके हो रहो
आख़िर[५] हुई कहानी मेरी तुम भी सो रहो
जोशे - मुहीते - इश्क़ में क्या जी से गुफ़्तगू
इस गौहरे - गिरामी[६] से अब हाथ धो रहो
इतना सियाह-ख़ानए-आशिक़[७] से नंग[८] क्या
कितने दिनों में आये हो यां रात तो रहो
ख़तरा बहुत है 'मीर' रहे - सअबे - इश्क़[९] में
ऐसा न हो कहीं कि दिलो-दीं को खो रहो

१. कभी २. कभी ३. खून से चिपकी हुईं ४. कहानी ५. समाप्त ६. क़ीमती मोती ७. प्रेमी के अन्धेरे घर ८. शर्म ९. प्रेम का कठिन मार्ग

इस बाग़े-बेसबात[1] में क्या दिल सबा[2] लगे
क्या-क्या निहाल[3] देखते यां पांव ग्रा लगे
किसको ख़बर है कश्ती-तबाहों के हाल की
तख़्ता मगर[4] किनारे कोई बह के जा लगे
मक़सूद[5] के ख़याल में बहुतों ने छानी खाक
ग्रालम तमाम वहम है यां हाथ क्या लगे
सब चाहते हैं देर रहे 'मीरे'-दिलज़दा[6]
यारब किसू तो दोस्त की उसको दुग्रा लगे

◇ ◇ ◇

जागना था हमको सो बेदार होते रह गये
कारवां जाता रहा हम 'हाय सोते रह गये
जी दिये बिन वह दुरे-मक़सूद[7] कब पाया गया
बेजिगर थे 'मीर' साहब जान खोते रह गये

◇ ◇ ◇

कारे-दिल[8] उस महे-तमाम[9] से है
काहिश[10] इक रोज़ मुझको शाम से है
तुम नहीं फ़ितना-साज़[11] सच साहब
शहर पुर-शोर[12] इस ग़ुलाम से है
कोई तुझसा भी काश तुझको मिले
मुद्दग्रा हमको इन्तक़ाम[13] से है

१. नश्वर बाग़ (संसार) २. सुबह की हवा ३. पौधे ४. शायद ५. लक्ष्य (प्रियतम, ईश्वर) ६. दुखी 'मीर' ७. वांछित मोती ८. दिल का काम ९. पूर्ण-चन्द्र (प्रियतम) १०. तकलीफ़ ११. मुसीबत ढाने वाले १२. परेशानी में १३. बदला

शेर मेरे हैं सब ख़वास-पसंद[१]
गुफ़्तगू पर मुझे अवाम से है
सहल है 'मीर' का समझना क्या
हर सुख़न[२] उसका इक मुक़ाम से है

◇ ◇ ◇

उस शोख़ से हमें भी अब यारी हो गयी है
शर्म अंखड़ियों में जिसकी अय्यारी[३] हो गयी है
रोता फिरा हूँ बरसों लोहू चमन-चमन में
कूचे में उसके यकसर गुलकारी[४] हो गयी है
उस से दो-चार होना आता नहीं मयस्सर
मरने में इससे हमको नाचारी हो गयी है
शाही से कम नहीं है दरवेशी अपनी हां तो
अब ऐब कुछ जहां में नादारी[५] हो गयी है
हमको तो दर्दे-दिल है तुम ज़र्द क्यों हो इतने
क्या 'मीर' जी तुम्हें कुछ बीमारी हो गयी है

◇ ◇ ◇

यार बिन तल्ख़[६] ज़िन्दगानी थी
दोस्ती 'मुद्दई - ए - जानी[७] थी
लुत्फ़ पर उसके हमनशीं[८] मत जा
कभू हम पर भी मेहरबानी थी

---

१. विशिष्ट लोगों को प्रिय २. बात ३. चालाकी ४. फूल-बूटे बनाना ५. निर्धनता ६. कड़वी ७. जान की दुश्मन ८. दोस्त

हाथ आता जो तू तो क्या होता
बरसों तक हमने खाक छानी थी
मेरे क़िस्से से सब की गयीं नींदें
कुछ अजब तौर की कहानी थी
फ़ुक़्र[१] पर भी था 'मीर' के इक रंग
कफ़नी पहनी सो ज़ाफ़रानी[२] थी

◇ ◇ ◇

कभू 'मीर' उस तरफ़ आकर जो छाती कूट जाता है
खुदा शाहिद[३] है अपना तो कलेजा टूट जाता है
खराबी दिल की क्या अम्बोहे-दर्दे-ग़म[४] से पूछो हो
वही हालत है जैसे शहर लशकर लूट जाता है
न यूं होवे कि उठ जाऊँ कि है अफ़सोस की जागह
जब ऐसा तायरे-खुश-लहजा[५] फंस कर छूट जाता है

◇ ◇ ◇

जुनूं का अबस[६] मेरे मज़कूर[७] है
जवानी दिवानी तो मशहूर है
गदा[८] [illegible] दोनों हैं दिल-बाख्ता[९]
अजब इश्क़ - बाज़ी का दस्तूर है
अब हम नातवानों को मरना है सिर्फ़
नहीं वह कि जीना भी मंज़ूर है

---

१. फ़क़ीरी २. केसरिया ३. गवाह ४. दुखातिरेक ५. सुरीले गले वाला पक्षी ६. बेकार ७. ज़िक्र ८. भिखारी ९. दिल हारे हुए

गया शायद उस शमा-रू[१] का ख़याल
कि अब 'मीर' के मुँह पे कुछ नूर है

◇ ◇ ◇

कोफ़्त से जान लब[२] पर आयी है
हमने क्या दिल पे चोट खायी है
दीदनी[३] है शिकस्तगी[४] दिल की
क्या इमारत ग़मों ने ढायी है
मर्गे-मजनूं[५] से अक़्ल गुम है 'मीर'
क्या दिवाने ने मौत पायी है

◇ ◇ ◇

जल गया दिल मगर ऐसी जो बला निकले है
जैसे लू चलती मेरे मुंह से हवा निकले है
पारसाई[६] धरी रह जायेगी मसजिद में शैख़
वह जो इस राह कभू मस्ती में आ निकले है
अज्र[७] से ख़ाली नहीं इश्क़ में मारे जाना
दे है जो सर कोई, कुछ यां से भी पा निकले है
क्या है इक़बाल कि उस दुश्मने-जाँ के आते
मुँह से हर एक के सौबार दुआ निकले है
वैसा बेजा नहीं दिल 'मीर' का जो रह न सके
चलता फिरता कभू उस पास भी जा निकले है

◇ ◇ ◇

१. सुन्दर मुख वाला (प्रियतम) २. होंठ ३. दर्शनीय ४. टूटना
५. मजनू की मौत ६. पवित्रता ७. इनाम

तीसरा दीवान

क्या काम किया हमने यूँ दिल न लगाना था
इस जान की जोखों को उस वक़्त न जाना था
हर आन थी सरगोशी या बात नहीं गाहे[1]
औक़ात[2] है इक यह भी इक वह भी ज़माना था
क्योंकर गली से उसकी मैं उठके चला जाता
या ख़ाक में मिलना था लोहू में नहाना था
जब तूने नज़र फेरी तब जान गई उसकी
मरना तेरे आशिक़ का मरना कि बहाना था
कहता था किसू से कुछ तकता था किसू का मुंह
कल 'मीर' खड़ा था यां सच है कि दिवाना था

◇ ◇ ◇

अजब नहीं है जो जाने न 'मीर' चाह की रीत
सुना नहीं है मगर यह कि जोगी किसके मीत
मत इन नमाज़ियों को ख़ाना-साज़े-दीं[3] जानो
कि एक ईंट की ख़ातिर ये ढाते हैंगे मसीत
शफ़क़[4] से हैं दरो-दीवार ज़र्द शामो-सहर[5]
हुआ है लखनऊ इस रहगुज़र में पीलीभीत

---

१. कभी २. समय ३. धर्म-निर्माता ४. सूर्योदय और सूर्यास्त की लाली ५. सुबह-शाम

कहा था हमने बहुत बोलना नहीं है
हमारे यार को सो अब हमीं से बात न चीत

◇ ◇ ◇

पड़ती है आँख जाकर हर दम सफ़ाई तन पर
सौ जी गये थे सदक़े उस शोख़ के बदन पर
नामे-ख़ुदा निकाले क्या पांव रफ़्ता-रफ़्ता
तलवारें चलतियां हैं उसके तो अब चलन पर
दिल जो नहीं बजा[1] है वहशी-सा मैं फिरूं हूं
तुम जाइयो न हरगिज़ मेरे दिवानापन पर
तब तक भले थे जब तक हर्फ़-आशना[2] न थे तुम
लेने लगे लड़ाई अब तो सुख़न-सुख़न[3] पर
किस तरह 'मीर' जी का हम तौबा करना मानें
कल तक भी दाग़े-मै[4] थे सब उसके पैरहन[5] पर

◇ ◇ ◇

अब की हज़ार रंग गुलिस्तां[6] में आये गुल
पर उस बग़ैर अपने तो जी को न भाये गुल
नाचार हो 'चमन में न रहिए' कहूं हूं जब
बुलबुल कहे है 'और कोई दिन बराये-गुल[7]'
बुलबुल को क्या सुने कोई उड़ जाते हैं हवास
जब दर्दमंद कहते हैं दम भर के 'हाय गुल'

---

१. दुरुस्त २. बात समझने वाले ३. बात-बात ४. शराब के दाग
५. वस्त्र ६. बाग़ ७. फूल (या प्रियतम) के लिए

क्या समझे लुत्फ़ चेहरों के रंगो-बहार का
बुलबुल ने और कुछ नहीं देखा सिवाय गुल
था वस्फ़[१] उन लबों का[२] ज़बाने-क़लम पे 'मीर'
या मुंह में अंदलीब[३] के थे बर्ग-हाए-गुल[४]

◇ ◇ ◇

इश्क़ ने ख्वारो-ज़लील किया, हम सर को बिखेरे फिरते हैं
सोज़ो - दर्दो - दाग़ो - अलम[५] सब जी को घेरे फिरते हैं
दिल लश्कर में एक सिपाहीज़ादे ने हमसे छीन लिया
हम दरवेश तलब में उसकी डेरे डेरे फिरते हैं
बेखुद[६] उसके ज़ुल्फ़ो-रुख़ के काहे को आप में फिर आयें
हम कहते हैं तसल्ली दिल को सांझ सवेरे फिरते हैं
पाये-निगार-आलूदा कहां पर सांझ को 'मीर' ने देखे थे
सुबह तक अब भी आंखों में उसकी पांओं[७] तेरे फिरते हैं

◇ ◇ ◇

जाये है जी नजात के ग़म[८] में
ऐसी जन्नत गयी जहन्नुम में
आप में हम नहीं तो क्या है अजब
दूर उससे रहा है क्या हम में
बेखुदी[९] पर न 'मीर' की जाओ
तुमने देखा है और आलम में

---

१. प्रशंसा २. होठों ३. बुलबुल ४. फूलों की पंखुड़ियां ५. जलन, दर्द, दाग़ और रंज ६. प्रेमी ७. पांव ८. स्वर्ग-प्राप्ति ९. आत्म-विस्मृति

जिसका खूबां[1] खयाल लेते हैं
दिल कलेजा निकाल लेते हैं
क्या नज़रगाह[2] है कि शर्म से गुल
सर गरेबां में डाल लेते हैं
हैं गदा[3] 'मीर' भी वले[4] दो जहां
करके इक ही सवाल लेते हैं

◇ ◇ ◇

रहता है पेशे-दीदा-ए-तर[5] आह का सुभाव
जैसे मुसाहिब अब्र[6] की होती है कोई बाउ
हासिल कोई उमीद हुई हो तो मैं कहूं
ख़ूं ही हो आ गये हैं मेरे दिल में सब रचाव

◇ ◇

कश्ती-ए-चश्म[7] डूब रही बहरे-इश्क़[8] में
आयी न पार होते नज़र आशिक़ों की नाव
सीने के अपने ज़ख्म से ख़ातिर हो जमा क्या
दिल ही की ओर पाते हैं सब लोहू का बहाव
ग़ैरत का इश्क़ की है तरीक़ा ही कुछ जुदा
उसकी गली की ख़िज़्र[9] को भी राह मत बताओ
ज़ाहिर हैं देखने से गुनह क्योंकि तेरे सब
छुपते हैं 'मीर' कोई दिलों के कहीं लगाव

◇ ◇ ◇

---

१. सुन्दर व्यक्ति २. देखने की जगह ३. भिखारी ४. किन्तु ५. भीगी आंख के आगे ६. बादल ७. आंख-रूपी नाव ८. प्रेम-रूपी समुद्र ९. भूले-भटकों को रास्ता बताने वाले एक बुजुर्ग

कैसे नाज़ो - नबख़्तर[1] से हम अपने यार को देखा है
नौगुल[2] जैसे जल्वा करे उस रश्के-बहार[3] को देखा है
एक न आया दीद में अपनी दिलकश दिलचस्प उसके रंग
इन आंखों ने इस गुलशन में यूं तो हज़ार को देखा है
बाउ से गर पत्ता खड़के है चोट चले है ज़ालिम की
हमने दामगहों[4] में उसके ज़ौक़े-शिकार[5] को देखा है
जमा करो दिल 'मीर' से तुम भी बेताबी थी दिल को बहुत
कुछ अच्छे आसार न थे मैं उस बीमार के देखा है

◇ ◇ ◇

चले हम अगर तुमको इकराह[6] है
फ़क़ीरों की अल्लाह अल्लाह है
ग़मे-इश्क़ है नागहानी बला
जहां दिल लगा कुढ़ना जांकाह है
चिराग़ाने-गुल[7] से है क्या रौशनी
गुलिस्तां किसू की क़दमगाह[8] है
मुहब्बत है दरिया में जा डूबना
कुएं में भी गिरना यही चाह[9] है
कली सा हो कहते हैं मुंह यार का
नहीं मोतबिर[10] कुछ ये अफ़वाह है

१. गर्व २. ताज़ा फूल ३. जिससे बहार भी ईर्ष्या करे ४. शिकार की जगह ५. शिकार का शौक़ ६. चिढ़ ७. फूलों की दीप-मालाएँ ८. घूमने की जगह ९. चाह प्रेम के अतिरिक्त कुएं को भी कहते हैं १०. विश्वसनीय

गया 'मीर' के जी के सुनकर वो शोख़
लगा कहने सबको यही राह है

◇ ◇ ◇

दस्तबस्ता[१] काम नाखुन कर गये
सब ख़राशों ही से जब ही भर गये
बुतकदे[२] से तो चले काबे वले[३]
दस क़दम हम दिल को कर पत्थर गये
मजलिसों की मजलिसें बरहम[४] हुईं
लोग वे पल मारते कीधर[५] गये
दस्त-अफ़शां[६] पाये-कोबां[७] शौक़ में
सौमए[८] से 'मीर' जी बाहर गये

◇ ◇ ◇

१. हाथ बांधे हुए २. मंदिर ३. लेकिन ४. छिन्न-भिन्न ५. किधर
६. हाथ फेंकते ७. पांव पटकते ८. फ़क़ीरों की कोठरी

चौथा दीवान

इश्क़ क्या क्या आफ़तें लाता रहा
आख़िर अब दूरी से जी जाता रहा
दिल हुआ कब इश्क़ की रह का दलील[1]
मैं तो ख़ुद गुम ही इसे पाता रहा
मुँह दिखाता बरसों वह ख़ुशरू[2] नहीं
चाह का यूं कब तलक नाता रहा
कुछ न मैं समझा जुनूनो-इश्क़ में
देर नासेह[3] मुझको समझाता रहा
कैसे कैसे रुक गये हैं 'मीर' हम
मुद्दतों मुंह तक जिगर आता रहा

◇ ◇ ◇

चाहत का इज़हार किया सो अपना काम ख़राब हुआ
इस परदे के उठ जाने से उसको हम से हिजाब[4] हुआ
क्या कहिए महताब[5] में शब[6] की वह भी टुक आ बैठा था
ताबे-रुख़[7] इस मह[8] ने देखी सौ दर्जा बेताब हुआ
शमा जो आगे शाम को आयी इश्क़ से जलकर ख़ाक हुई
सुबह गुले-तर सामने होकर जोशे-शर्म से आब[9] हुआ

१. पथ-प्रदर्शक २. सुन्दर ३. उपदेशक ४. लाज ५. चांदनी ६. रात ७. मुँह की चमक ८. चांद ९. पानी

मरते न थे हम इश्क़ के रफ़्ता बेकफ़नी से यानी 'मीर'
देर मयस्सर इस आलम में मरने का असबाब हुआ

◇ ◇ ◇

मरते हैं हम तो आदमे-ख़ाकी की शान पर
अल्लाह रे दिमाग़ कि है आसमान पर
आफ़ात[१] में है मुर्ग़े-चमन गुल के शौक़ में
जोखों हज़ार-रंग[२] के रहती है जान पर
उस कामे-जां[३] के जल्वों का मैं ही नहीं हलाक[४]
आफ़त अजब तरह की है सारे जहान पर
अंदाज़ो-नाज़ अपने उस औबाश के हैं क़हर
सौ सौ जवान मरते हैं एक एक आन पर
शोख़ी तो देखो आप कहा आओ बैठो 'मीर'
पूछा कहां, तो बोले कि मेरी ज़बान पर

◇ ◇ ◇

लोग बहुत पूछा करते हैं क्या कहिए मियां क्या है इश्क़
कुछ कहते हैं सिर्रे-इलाही[५] कुछ कहते हैं ख़ुदा है इश्क़
इश्क़ की शान अक्सर है अरफ़अ[६] लेकिन शानें अजायब हैं
गह[७] सारे ही दिमाग़ो-दिलों में गाहे सबसे जुदा है इश्क़
उल्फ़त से परहेज़ किया कर कुल्फ़त[८] इसमें क़यामत है
यानी दर्दो-रंजो-तअब[९] है आफ़ते-जां है बला है इश्क़

---

१. मुसीबतों २. बुलबुल ३. प्रियतम ४. मारा हुआ ५. ईश्वरीय रहस्य ६. ऊंची ७. कभी ८. तकलीफ़ ९. तकलीफ़

'मीर' ख़िलाफ़ मिज़ाजे-मुहब्बत मूजिबे-तलख़ी कशीदन[१] है
यार मुआफ़िक़ मिल जाये तो लुत्फ़ है चाह मज़ा है इश्क़

◇ ◇ ◇

सुबह हुई गुलज़ार में तायर[२] दिल को अपने टटोलें हैं
याद में उस ख़ुद-रौ[३] गुले-तर के कैसे कैसे बोलें हैं
बाग़ में जो हम दीवाने से जा निकलें हैं नाला-कुनां[४]
गुंचे[५] होकर मुर्ग़[६] चमन के साथ हमारे हो लें हैं
यार हमारा आसां क्या कुछ सीना-कुशादा[७] हम से मिला
ख़ून करें हैं जब दिल को वे बंद क़बा के खोलें हैं
हमें जो बरसे है शिद्दत से देख अंधेरी क्या है यह
यानी तंग जो हम आये हैं दिल को खोल के रो ले हैं
मर्ग[८] का वक़्फ़ा[९] इस रस्ते में क्या है 'मीर' समझते हो
हारे मांदे राह के हैं हम लोग कोई दम सो लें हैं

◇ ◇ ◇

यूं नाकाम रहेंगे कब तक जी में है इक काम करें
रुसवा होकर मारे जावें उसको भी बदनाम करें
जिसको ख़ुदा देता है सब कुछ वे ही सब कुछ देते हैं
टोपी लंगोटी पास अपने हम इस पर क्या इनआम करें
मुंह खोले तो रोज़ है रौशन ज़ुल्फ़ों के बिखरे रात है फिर
इन तौरों से आशिक़ क्योंकर सुबह को अपनी शाम करें

१. मुसीबत का कारण २. चिड़ियां ३. अपने आप उगने वाला
४. रोते हुए ५. कलियों (की भांति चुप) ६. पक्षी ७. खुलकर ८. मौत
९. ठहरना

मैले-गदाई[१] तबा[२] को अपनी कुछ भी नहीं है वरना 'मीर'
दो आलम को मांग के लायें हम जो तनिक अबराम[३] करें

◇ ◇ ◇

दुनिया की क़द्र क्या जो तलबगार हो कोई
कुछ चीज़ माल हो तो ख़रीदार हो कोई
क्या इज़्तराबे-दिल से कहे 'मीर' सिर्रे-इश्क़[४]
यह हाल समझे वह जो गिरफ़्तार हो कोई

◇ ◇ ◇

मौसम है निकले शाख़ों से पत्ते हरे-हरे
पौधे चमन में फूलों से देखे भरे-भरे
आगे किसू के क्या करें दस्ते-तमअ़[५] दराज़
वह हाथ सो गया है सिरहाने धरे-धरे
क्या समझे उसके रुतबए-आली को अहले-ख़ाक[६]
फिरते हैं ज्यूं सिपहर[७] बहुत हम वरे-वरे[८]
मरता था मैं तो बाज़ रखा मरने से मुझे
यह कह के कोई ऐसा करे है अरे-अरे
गुलशन में आग लग रही थी रंगे-गुल से 'मीर'
बुलबुल पुकारी देख के साहब परे-परे

◇ ◇ ◇

आज हमें बेताबी-सी थी सब्र की दिल से रुख़सत थी
चारों ओर निगह करने में आलम-आलम हैरत थी

१. भिक्षा की इच्छा २. तबियत ३. तंग करना ४. प्रेम-रहस्य
५. लालची हाथ ६. ज़मीन वाले ७. आसमान ८. दूर-दूर

किस मेहनत[1] से मुहब्बत की थी किस ख्वारी से चारी की
रंज ही सारी उम्र उठाया कुल्फ़त[2] थी या उल्फ़त थी
बदनामी क्या इश्क़ की कहिए रुसवाई-सी रुसवाई है
सहरा-सहरा[3] वहशत भी थी दुनिया-दुनिया तोहमत थी
अहद[4] हमारा तेरा है यह जिसमें गुम है मेहरो-वफ़ा[5]
अगले ज़माने में तो यही लोगों की रस्मो-आदत थी
जो उठता है याँ से बगूला हम-सा है आवारा कोई
इस वादी[6] में 'मीर' मगर[7] मरगश्ता[8] किसू की तुरबत[9] थी

१. मुसीबत २. तकलीफ़ ३. जंगल-जंगल ४. ज़माना ५. कृपा ६. घाटी ७. शायद ८. परेशान ९. क़ब्र

पांचवां दीवान

सुख़न-मुश्ताक़[1] है आ़लम हमारा
ग़नीमत है जहां में दम हमारा
रहे हम आ़लमे-मस्ती में अक्सर
रहा कुछ और ही आ़लम हमारा
बहुत ही दूर हम से भागते हो
करो हो पास[2] कुछ तो कम हमारा
बिखर जाते है कुछ गेसू तुम्हारे
हुआ है कामे-दिल बरहम[3] हमारा
रखे रहते हैं दिल पर हाथ ऐ 'मीर'
यहीं शायद कि है सब ग़म हमारा

◇ ◇ ◇

इश्क़ हमारे ख़याल पड़ा है चैन गया आराम गया
दिल का जाना ठहर गया है सुबह गया या शाम गया
आया याँ से जाना है तो जी का छुपाना क्या हासिल
आज गया या कल जावेगा सुबह गया या शाम गया
हाय जवानी क्या-क्या कहिए शोर सरों में रखते थे
अब क्या है, वह अहद[4] गया वह मौसम वह हंगाम[5] गया

१. काव्य-प्रेमी २. ख़याल ३. बिखरा हुआ ४. ज़माना ५ वक्त

नालाए-'मीर' सवाद[1] में अब तक दोशीं[2] शब से नहीं आया
शायद शहर से ज़ालिम के हो आशिक़ वह बदनाम गया

◇ ◇ ◇

दिल ख़ूं हुआ था यकसर पानी हुआ जिगर सब
ख़ूं-बस्ता[3] रहतियाँ थीं पलकें सो अब हैं तर सब
यारब किधर गये वे जो आदमी-रविश थे
ऊजड़ दिखायी दें हैं शहर-ओ-दह[4] -ओ-नगर सब
आलम के लोगों का है तसवीर का-सा आलम
ज़ाहिर खुली हैं आंखें लेकिन हैं बेख़बर सब
'मीर' इस ख़राबे[5] में क्या आबाद होवे कोई
दीवारो - दर गिरे हैं वीरां पड़े हैं घर सब

◇ ◇ ◇

इश्क़े-ख़ुदाई-ख़राब[6] है ऐसा जिससे गये हैं घर के घर
काबा-ओ-दैर[7] के ऐवानों[8] के गिरे पड़े हैं दर के दर
हज से जो कोई आदमी हो तो सारा आलम हज ही करे
मक्के से आये शैख़ जी लेकिन वे तो वही हैं ख़र[9] के ख़र
मुस्लिमो-काफ़िर के झगड़े में जंगो-जदल[10] से रिहाई नहीं
लोथों पे लोथें गिरती रहेंगी कटते रहेंगे सर के सर
कब से गर्मीए-इश्क़ ने मेरे चश्मा-ए-चश्म[11] को ख़ुश्क किया
कपड़े गले हैं सारे लेकिन वे नहीं अब तक तर के तर

◇ ◇ ◇

---

१. शहर २. कल (बीता हुआ) ३. ख़ून से चिपकीं ४. गांव
५. खंडहर (दुनिया) ६. संसार के मिटाने वाला ७. काबा और मंदिर
८. बड़ी इमारतों ९. गधा १०. युद्ध ११. आंख-रूपी झरना

अर्ज़ो-समा[1] में इश्क़ है सारा चारों ओर भरा है इश्क़
हम हैं जनाबे-इश्क़ के बन्दे नज़दीक अपने ख़ुदा है इश्क़
एक तरफ़ जब्रील आता है एक तरफ़ लाता है किताब
एक तरफ़ पिनहां[2] है दिलों में एक तरफ़ पैदा है इश्क़
ज़ाहिरो-बातिन[3] अव्वलो-आख़िर, पायीं-बाला[4] इश्क़ है सब
नूरो-ज़ुलमत[5] मानी-ओ-सूरत सब कुछ आप ही हुआ है इश्क़
'मीर' कहीं हंगामा-आरा[6] मैं तो नहीं हूं चाहत का
सब्र न मुझ से किया जावे तो माफ़ रखो कि बना है इश्क़

◇ ◇ ◇

बेताब है दिल ग़म से निपट ज़ार है आशिक़
क्या जा[7] कि दो-चार उससे हो नाचार है आशिक़
रहता है खड़ा धूप में दो-दो पहर आगे
बे-जुर्म सदा उसका गुनहगार है आशिक़
उठता नहीं तलवार के साये के तले से
यानी हमादम[8] मरने को तय्यार है आशिक़
चस्पां[9] हुए हैं 'मीर' ख़रीदार से तनहा
क्या जिन्स है माशूक़ कि बाज़ार है आशिक़

◇ ◇ ◇

दिल-दिल लोग कहा करते हैं तुमने जाना क्या है दिल
चश्मे-बसीरत[10] वा[11] होवे तो अजायब दीद की जा[12] है दिल

---

१. ज़मीन-आसमान २. छुपा ३. प्रकट-अप्रकट ४. ऊपर-नीचे ५. प्रकाश-अन्धकार ६. शोर मचाने वाला ७. जगह (मजाल) ८. हमेशा ९. चिपके १०. ज्ञान-चक्षु ११. खुली १२. जगह

जिस सहरा[1] को कुशादा-दामन[2] हम तुम सुनते आये हैं
बंद आंखें कर टुक देखो तो वैसा ही सहरा है दिल
मत पूछो 'क्यों ज़ीस्त[3] करो हो मुर्दे-सी अफ़सुर्दा[4] तुम'
हिज्र में उसके हम लोगों ने बरसों तक मारा है दिल
'मीरे'-परीशां दिल के ग़म में क्या-क्या ख़ातिरदारी की
ख़ाक में मिलते क्यों न फिरें अब ख़ूं हो बह भी गया है दिल

◇ ◇ ◇

आंखें सफ़ेद दिल भी जला इंतज़ार में
क्या कुछ न हम भी देख चुके हिज्रे-यार में
दुनिया में एक दो नहीं करता कोई मुक़ाम
जो है रवारवी ही में है इस दियार[5] में
देखी थीं एक रोज़ तेरी मस्त अंखड़ियां
अंगड़ाइयां सी लेते हैं अब तक ख़ुमार में
शोर अब चमन में मेरी ग़ज़ल-ख़्वानी[6] का है 'मीर'
इक अंदलीब[7] क्या है कहूं मैं हज़ार में

◇ ◇ ◇

हम जानते तो इश्क़ न करते किसू के साथ
ले जाते दिल को ख़ाक में इस आरज़ू के साथ
नाज़ां[8] हो उसके सामने क्या गुल खिला हुआ
रखता है लुत्फ़े-नाज़ भी रूए-निकू[9] के साथ

---

१. जंगल २. चौड़ा-चकला ३. ज़िन्दगी ४. मुर्झाई ५. देश
६. ग़ज़ल पढ़ना ७. बुलबुल ८. गर्वित ९. सुन्दर मुख

हंगामे जैसे रहते हैं उस कूचे में सदा
ज़ाहिर है हश्र[1] होगी न ऐसी ग़लू[2] के साथ
मजरूह[3] अपनी छाती को बख़िया किया बहुत
सीना गठा है 'मीर' हमारा रफ़ू के साथ

◇ ◇ ◇

पत्ता-पत्ता बूटा-बूटा हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने बाग़ तो सारा जाने है
आशिक़ सा तो सादा कोई और न होगा दुनिया में
जी के ज़ियां[4] को इश्क़ में उसके अपना वारा जाने है
क्या-क्या फ़ितने सर पर उसके लाता है माशूक़ अपना
जिस बेदिल बेताबो-तवां[5] को इश्क़ का मारा जाने है

◇ ◇ ◇

दादो - फ़रियाद जा-ब-जा[6] करिए
शायद उसके भी दिल में जा करिए
अब सुलगने लगी है छाती भी
यानी मुद्दत पड़ी जला करिए
देखें कब तक रहे है यह सोहबत
गालियां खाइए दुआ करिए
वह नहीं सरगुज़िश्त[7] सुनता 'मीर'
यूं कहानी सी क्या कहा करिए

◇ ◇ ◇

१. क़यामत २. शोर ३. घायल ४. नुक़सान ५. अशक्त ६. जगह-जगह ७. कहानी

नाला[१] जब गर्म-कार[२] होता है
दिल कलेजे के पार होता है
मार रहता है उसको आखिरकार
इश्क़ को जिससे प्यार होता है
जब्र है, क़हर है, क़यामत है
दिल जो बेइख्तियार होता है
राह तकते ही बैठे हैं आँखें
उसका जब इन्तज़ार होता है
आह किस जा पे बार[3] खोला 'मीर'
याँ तो जीना भी बार होता है

◇ ◇ ◇

तेरे बंदे हैं हम ख़ुदा जानता है
ख़ुदा जाने हमको तू क्या जानता है
नहीं इश्क़ का दर्द लज़्ज़त से ख़ाली
जिसे ज़ौक़[४] है वह मज़ा जानता है
मुझे जाने है आप ही सा फ़रेबी
दुआ को भी मेरी दग़ा जानता है
जफ़ा उस पे करता है हद से ज़ियादा
जिसे यार अहले-वफ़ा[५] जानता है

१. रुदन २. कार्यरत ३. बोझ ४. प्रेम ५. प्रेमी

न गर्मी जलाती थी ऐसी न सर्दी
मुझे यार जैसा जला जानता है
मेरे दिल में रहता है तू ही तभी तो
जो कुछ दिल का है मुद्दआ जानता है
जहां 'मीर' आशिक़ हुआ ख्वार ही था
ये सौदाई कब दिल लगा जानता है

छठा दीवान

जब रफ़्तनी[1] को इश्क़ का आज़ार हो गया
दो चार दिन में बरसों का बीमार हो गया
निस्बत बहुत गुनाहों की मेरी तरफ़ हुई
नाकर्दा-जुर्म[2] मैं तो गुनहगार हो गया
दिल ले के मेरी जान का दुश्मन हुआ निदान
जिस बेवफ़ा से अपने तईं प्यार होगया
क्या जुर्म था किसू पे न मालूम कुछ हुआ
जो 'मीर' कुश्तो-ख़ूं[3] का सज़ावार[4] हो गया

◇ ◇ ◇

दिल की आफ़त है आई जानों पर
यह फ़साना[5] रहा ज़बानों पर
इश्क़ में होशो-सब्र सुनते थे
रख गये हाथ सो तो कानों पर
गर्चे इन्सान हैं ज़मीं वाले
हैं दिमाग़ उनके आसमानों पर
लोग सर देते जाते हैं कैसे
यार के पांव के निशानों पर

१. मरने वाला २. बग़ैर जुर्म किये ३. जान से मारना ४. पात्र
५. कहानी

क़िस्से दुनिया में 'मीर' बहुत सुने
न रखो गोश इन फ़सानों पर

◇ ◇ ◇

खा गयी यां की फ़िक्र सो मौहूम[१]
वहां क्या होगी कुछ नहीं मालूम
न हुए थे अभी जवां अफ़सोस
सब्र-मग़फ़ूर[२] - ओ-ताक़ते-मरहूम[३]
जब ग़ुबार अपने दिल का निकले है
देर रहती है आंधी कैसी धूम
है अबस[४] यह तरद्दुदो-तशवीश[५]
पहुंचे है वक़्त पर जो है मक़सूम[६]
साहब अपना है बंदा-परवर 'मीर'
हम जहां से न जायेंगे महरूम[७]

◇ ◇ ◇

उससे घबरा के जो कुछ कहने को आ जाता हूं
दिल की फिर दिल में लिये चुपके चला जाता हूं
गर्चे खोया सा गया हूं पे तहे-हर्फ़ो-सुख़न[८]
उस फ़रेबन्दा-ए-उश्शाक़[९] की पा जाता हूं
मजलिसे-यार में तो बार नहीं पाता हूं
दरो-दीवार को अहवाल सुना जाता हूं

१. वहम २. दिवंगत सब्र ३. स्वर्गवासी ताक़त ४. बेकार ५. फ़िक्र और परेशानी ६. भाग्य में ७. वंचित ८. बात की तह में ९. प्रेमियों को धोखा देने वाला

इक बियावां है मेरी बेकसी-ओ-बेताबी
जैसे आवाज़े-जरस[1] सबसे जुदा जाता हूं
गर्मी-ए-इश्क़ है हमदम[2] अभी हल्की दिल में
रोज़ो-शब-शामो-सहर मैं तो जला जाता हूं

◇ ◇ ◇

नज़र आया था सुबह दूर से वह
फिर छुपा ख़ुर[3] सा अपने नूर से वह
देखें आशिक़ का जी भी है कि नहीं
तंग है जाने-नासबूर[4] से वह
क्या तसव्वुर में फेरे है सूरत
कि सरकता नहीं हुज़ूर[5] से वह
ख़ूबी उस ख़ूबी सी बशर[6] में कहां
ख़ूबतर है परी व हूर से वह
ख़ुश हैं दीवानगी-ए-'मीर' से सब
क्या जुनूं कर गया शऊर से वह

◇ ◇ ◇

मुद्दत से तो दिलों की मुलाक़ात भी गयी
ज़ाहिर का पास था सो मुदारात[7] भी गयी
कितने दिनों में आयी थी उसकी शबे-विसाल
बाहम रही लड़ाई सो वह रात भी गयी

१. (कारवां के) घंटे की आवाज़ २. दोस्त ३. सूर्य ४. बेचैन जान ५. सामने ६. मनुष्य ७. शिष्टाचार

कुछ कहते आके हम, तो सुना करते वे ख़मोश
अब हर सुख़न[1] पे बहस है, वह बात भी गयी
फिरते हैं 'मीर' ख़्वार कोई पूछता नहीं
इस आशिक़ी में इज़्ज़ते-सादात[2] भी गयी

◇ ◇ ◇

जो लोग आसमां ने यां ख़ाक कर उड़ाये
बे-इब्रतों[3] ने लेकर ख़ाक उनकी घर बनाये
रहने की कोई जागह शायद न थी उन्हों के
जो याँ से उठ गये हैं फिर वे कभू न आये
लड़के बरहमनों के संदलभरी जबीनें[4]
हिन्दोस्तां में देखे सो उनसे दिल लगाये
क्या घूरते हो हरदम डरते नहीं हैं कुछ हम
जिन आंखों पर हैं आशिक़ उन आंखों के दिखाये
आहे-शरर-फ़शां[5] जो निकले है मुंह से हरदम
रौशन[6] है 'मीर' ग़म ने क़ल्बो-कबद[7] जलाये

◇ ◇ ◇

चर्ख़[8] पे अपना मदार[9] देखिए कब तक रहे
ऐसी तरह रोज़गार[10] देखिए कब तक रहे
उससे तो अहदो-क़रार कुछ भी नहीं दरमियान
दिल है मेरा बेक़रार देखिए कब तक रहे

१. बात २. सय्यद होने की प्रतिष्ठा ३. शिक्षा न लेने वालों ४. माथे ५. चिंगारी बरसाने वाली आह ६. स्पष्ट ७. दिल और कलेजा ८. आसमान ९. भरोसा १०. संसार

आंखें तो पथरा गयीं तकते हुए उसकी राह
शामो-सहर[1] इन्तज़ार देखिए कब तक रहे
आंखें मिलाता नहीं इन दिनों वह शोख़ टुक
बेमज़ा है हमसे यार देखिए कब तक रहे
रूए-सुखन[2] सब का है मेरी ग़ज़ल की तरफ़
शेर है मेरा शुआर[3] देखिए कब तक रहे
गेसू-ओ-रुख़सारे-यार[4] आंखों ही में फिरते हैं
'मीर' ये लैलो-निहार[5] देखिए कब तक रहे

१. सुबह-शाम २. बात का इशारा ३. ढंग ४. प्रियतम के केश और कपोल ५. रात-दिन

फुटकर शेर

गर्चे उम्मीदे-असीरी[1] पे ये नाशाद आया
राम[2] सय्याद का होते ही ख़ुदा याद आया

◇ ◇ ◇

दिल गया, रुसवा हुए, आख़िर को सौदा[3] हो गया
इस दो-रोज़ा-ज़ीस्त[4] में हम पर भी क्या-क्या हो गया

◇ ◇ ◇

आने के वक़्त तुम तो कहीं के कहीं रहे
अब आये तुम तो फ़ायदा ? हम ही नहीं रहे

◇ ◇ ◇

नाचार हम तो तुझ बिन जी मार कर रहेंगे
पर इस रविश को तेरी यह लोग क्या कहेंगे

◇ ◇ ◇

तेरी ज़ुल्फ़े-सियह की याद में आंसू झमकते हैं
अंधेरी रात है, बरसात है, जुगनू चमकते हैं

◇ ◇ ◇

ख़ाक से क्यों न 'मीर' यकसां[5] हूं
मुझ पे तो आसमान टूटा है

◇ ◇ ◇

हम रो-रो के दर्दे-दिले-दीवाना कहेंगे
जी में है कभू हाले-ग़रीबाना कहेंगे

१. क़ैद होने की आशा २. वश में ३. उन्माद ४. दो दिन की जिन्दगी ५. मिला हुआ

उम्र गुज़री कि तेरे कूचे के आने से गये
दूर से एक नज़र देख के जाने से गये

◇ ◇ ◇

जो सैल[१] सरश्क[२] का चले है
दरिया के भी होंट जा मिले है

◇ ◇ ◇

क्या कहूँ मैं 'मीर' अपनी सरगुज़िश्त[3]
इब्तदा[४] क़िस्से ही में वह सो गया

◇ ◇ ◇

कूचाए - यार से न जावेंगे
कैसे ही होंगे हम गये गुज़रे

◇ ◇

दिल ताब[५] टुक भी लाता तो कहने में कुछ आता
उस तिश्ना-काम[६] ने तो पानी भी फिर न मांगा

◇ ◇ ◇

ग़म में दिल, सब्र, होश ऐ प्यारे
हाथ कानों पे रख गये सारे

◇ ◇ ◇

उन ने देखा जो उठ के सोते से
उड़ गये आइने के तोते से

◇ ◇ ◇

---

१. बाढ़ २. आंसू ३. राम-कहानी ४. आरम्भ ५. सहन करने की शक्ति ६. प्यासा

देखता हूँ तो काम मेरा 'मीर'
अव्वले-इश्क़ ही में आख़िर है

◇ ◇ ◇

बस न लग चल नसीम[1] मुझ से कि मैं
रह गया हूँ चिराग़ सा बुझ कर

◇ ◇ ◇

इश्क़ में मर्ग[2] इब्तदा ले तू
जो न माने तो इंतिहा[3] ले तू

◇ ◇ ◇

ख़िज्र-रह[4] इश्क़ में न ढूंढ कि यां
राह की बात खोये देती है

◇ ◇ ◇

राह आँसू की कब तलक तकिए
ख़ूने-दिल ही का अब मज़ा चखिए

◇ ◇ ◇

१. सुबह की हवा २. मौत ३. अन्त ४. पथ-प्रदर्शक

रुबाइयाँ

दामन उज़लत[1] का अब लिया है मैंने
दिल मर्ग[2] से आशना[3] किया है मैंने
था चश्माए - आबे - ज़िंदगानी[4] नज़दीक
पर ख़ाक से उसको भर दिया है मैंने

◇ ◇ ◇

अफ़सोस है उम्र हमने यूं ही खोयी
दिल जिसको दिया उनने न की दिलजोई[5]
झुंझला के गला छुरी से काटा आख़िर
झुल ऐसी भी इश्क़ में करे है कोई

◇ ◇ ◇

अल्लाह को ज़ाहिद जो तलब करते हैं
ज़ाहिर तक़वा[6] को किस सबब करते हैं
दिखलाने को लोगों के है दोनों की सलाह
पेशे - अंजुम[7] नमाज़े - शब[8] करते हैं

◇ ◇ ◇

बुतख़ाने से दिल अपने उठाये न गये
काबे की तरफ़ मिज़ाज लाये न गये
तौरे - मसजिद को बरहमन क्या जाने
यां मुद्दते-उम्र में हम आये न गये

◇ ◇ ◇

---

१. एकांत २. मौत ३. परिचित ४. अमृत-स्रोत ५. मेहरबानी
६. पवित्रता ७. सितारों के सामने ८. रात की नमाज़

अब वक़्ते-अज़ीज़ को तो यूं खोओगे
पर सोच के ग़फ़लत के तईं रोओगे
क्या ख्वाबे-गिरां[1] पे मैल[2] रोज़ो-शब[3] है
जागो टुक 'मीर' फिर बहुत रोओगे

◇ ◇ ◇

दुनिया में बड़ा रोग जो है उल्फ़त है
दिक़ आ गये हैं जी से भी यह ज़हमत है
कहते थे कि 'मीर' बेवफ़ा हमको न जान
की खूब वफ़ा तुमने तुम्हें रहमत है

◇ ◇ ◇

हम 'मीर' से कहते हैं न तू रोया कर
हंस खेल के टुक चैन से भी सोया कर
पाया नहीं जाने का वो दुरे-नायाब[4]
कुढ़-कुढ़के अबस जान को मत खोया कर

◇ ◇

वस्फ़[6] अपने दिलों के किस से कहिए प्यारे
उस शोख़ की तमकीं[7] ने तो जी ही मारे
बातों में छुपा मुँह न कभू यूँ पूछा
कह 'मीर' गयी है रात क्योंकर बारे

◇ ◇ ◇

---

१. गहरी नींद २. इच्छा ३. रातदिन ४. अलभ्य मोती (प्रियतम)
५. बेकार ६. गुण ७. शान

राज़ी टुक आप को रज़ा[1] पर रखिए
मायल दिल को तनिक क़ज़ा पर रखिए
बंदों से तो कुछ काम न निकला ऐ 'मीर'
सब कुछ मौक़ूफ़[2] अब ख़ुदा पर रखिए

◇ ◇ ◇

तुम तो ऐ मेहरबान अनूठे निकले
जब आन के पास बैठे रूठे निकले
क्या कहिए वफ़ा एक भी वादा न किया
सच यह है कि तुम बहुत हो झूठे निकले

◇ ◇ ◇

मिलिए उस शख़्स से जो आदम होवे
नाज़ उसको कमाल पर बहुत कम होवे
हो गर्मे-सुख़न[3] तो गिर्द आवे इक ख़ल्क़[4]
ख़ामोश रहे तो एक आ़लम[5] होवे

◇ ◇ ◇

इतने भी हम ख़राब होते रहते
काहे को ग़मो-अलम से रोते रहते
सब ख़्वाबे-अदम[6] से चौंकने के हैं वबाल
बेहतर था यही कि वहीं सोते रहते

◇ ◇ ◇

---

१. ईश्वर की इच्छा २. निर्भर ३. वार्तारत ४. दुनिया (के लोग)
५. (रहस्यमय) संसार ६. मौत की नींद

अंदेशाए-मर्ग[1] से है सीना सब रेश[2]
टुकड़े है जिगर जैसे लिबासे-दरवेश
हाथों से जो आज हो सके कर लीजे
फिर कल तो हमें है एक क़यामत दरपेश

◇ ◇ ◇

हर रोज़ नया एक तमाशा देखा
हर कूचे में सौ जवाने-रअ़ना[3] देखा
दिल्ली थी तिलिस्मात कि हर जागह 'मीर'
इन आंखों से हमने आह क्या-क्या देखा

◇ ◇ ◇

औक़ात जवानी के गये इश्रत में
अय्याम[4] लड़कपन के गये ग़फ़लत में
पीरी में जुज़[5] अफ़सोस किया क्या जाये
यक बार कमी हो आगयी ताक़त में

◇ ◇ ◇

जिस वक़्त शुरूअ़ यह हिकायत होगी
रंजीदगी-ए-यक-दिगर[6] निहायत होगी
अहवाल वफ़ा का अपनी हरगिज़ मुझसे
मत पूछ, कि कहने में शिकायत होगी

◇ ◇ ◇

---

१. मौत के डर २. घायल ३. सुन्दर युवक ४. दिन ५. सिवाय
६. एक दूसरे की बात से बुरा मानना

फिर इश्क़ में 'मीर' पांव धरता हैगा
जी और मुग़न्नज़[1] अपना करता हैगा
सब मिल के चलो बुला उसे समझावें
अफ़सोस कि वह जवान मरता हैगा

◇ ◇ ◇

कहता है यह—अपनी आँखों देखेंगे—फ़क़ीर
बीनश[2] नहीं रखते क्या जवां हों क्या पीर
अंधे हैं जहां के सारे लोग ऐ 'मीर'
सूझे न जिसे वैसे ये कहते हैं बसीर[3]

◇ ◇ ◇

चुपके रहना न 'मीर' दिल में ठानो
बोलो-चालो कहा हमारा मानो
इक हर्फ़ न कह सकोगे वक़्ते-रफ़्तन[4]
चलने को ज़बान के ग़नीमत जानो

◇ ◇ ◇

यारों को कदूरतें[5] हैं अब तो हम से
जिस रोज़ कि हम जायेंगे इस आलम से
उस रोज़ खुलेगी साफ़ सब पर यह बात
इस बज़्म की रौनक़ थी हमारे दम से

◇ ◇ ◇

१. दुखी २. देखने की ताक़त ३. देखने वाला ४. जाते (मरते) समय ५. दुश्मनियां

एक मसनवी

चमन से इनायत के बादाम दार
इलाही ज़बां दे मुझे मग़ज़दार
सिफ़त इश्क़ की ता[1] करूं मैं बयां
रहूं इश्क़ कहने से मैं तर ज़बां
अजब इश्क़ है मर्द-कार-आमदा[2]
जहां दोनों इसके हैं बरहमज़दा[3]
जहां जंग सफ़[4] की ये ज़ालिम लड़ा
सफ़ उल्टी, जहां एक मारा पड़ा
अगर लोग मारे गये सर-बसर
हुई फ़तह उसकी ये है तुरफ़ातर[5]
कोई कुश्तनी[6] जो तरफ़[7] हो गया
तहे-तेग़[8] उसके तलफ़[9] हो गया
जहां जिस किसू से इसे चाह है
वहीं उसके ता-क़त्ल[10] हमराह है
किसू से अगर हो गयी लाग सी
दरूनी[11] में उसके लगी आग सी

१. ताकि २. युद्ध-वीर ३. बरबाद किये हुए ४. सै[illegible] पंक्ति ५. विशेष बात ६. मरने वाला ७. आकृष्ट ८. तलवार के नीचे ९. नष्ट १०. कत्ल होने तक ११. दिल

हुआ मुल्तफ़ित यह किसू पर कहीं
तो नामो-निशां उसका फिर वां नहीं
वफ़ाक़[1] इसका निकला सरासर निफ़ाक़[2]
पड़ा आशिक़ों में अजब इत्तफ़ाक़
जवां कैसे - कैसे मुए इश्क़ में
बहुत घर ख़राबे[3] हुए इश्क़ में
बहुत इश्क़ में लोग रोगी हुए
बहुत खाक मल मुंह पे जोगी हुए
गये दश्त[4] में कुछ नमद-मू[5] हुए
कुछ इक शहर में फिरके यकसू हुए
न मुर्ग़े-चमन ही है नालां-ओ-ज़ार[6]
गये दाग़ कुहसार[7] से लालाज़ार[8]
किसू का जिगर ग़म से ख़ूं हो गया
किसू कोहकन[9] को जुनूं हो गया
कोई ज़ार[10] बारां[11] बहुत रो चुका
कोई बर्क़[12] सा जल-बुझा हो चुका
ग़रज़ इश्क़ का हर तरफ़ ज़ोर है
नयी रोज़ शहरों मे इक गोर[13] है

---

१. दोस्ती २. दुश्मनी ३. खंडहर ४. जंगल ५. बाल बिखराये ६. दुखी और रोते हुए ७. पहाड़ ८. गुले-लाला के जंगल ९. पहाड़ काटने वाला (फ़रहाद) १०. दुखी ११. वर्षा १२. बिजली १३. क़ब्र

बहुत जान नाकाम देते गये
तमन्नाए - दिल साथ लेते गये
बहुत अह्ले-इस्लाम काफ़िर हुए
बहुत अव्वले - इश्क़ आखिर हुए
बहुत जुर्मे-उल्फ़त पे मारे गये
जुआ इश्क़ का खेले हारे गये
हुए खान्दां कैसे-कैसे खराब
जवां ज्यूं जवानी गये क्या शिताब[1]
किया इश्क़ जिस दिन से, मरते रहे
जियों ही का अंदेशा करते रहे
किसे इश्क़ ने जी से मारा नहीं
यही दर्द है जिसका चारा[2] नहीं
दवा इश्क़ की सख्त नायाब[3] है
सरे - आशिक़ां[4] संग[5] का बाब[6] है
जो हो इश्क़ आरिज़[7] तो फिर यास[8] है
अबस[9] कोई दिन जीने का पास[10] है
मुहब्बत है नैरंग-साज़े - अजीब[11]
फ़साने हैं उसके अजीबो - ग़रीब

१. जल्दी २. इलाज ३. अलभ्य ४. प्रेमियों के सर पर ५. पत्थर ६. दरवाज़ा ७. आवश्यक ८. निराशा ९. बेकार १०. ख़याल ११. जादूगर

कहीं इश्क़ से आरज़ू - कुश[1] गये
गये ख़ुश जो आशिक़ सो नाख़ुश गये
कहीं सहलतर यार मरने लगे
कहीं लोग दुश्वार मरने लगे
कहीं काम इसने किये हैं अजब
फ़साना हुई बज़्मे - ऐशो - तरब[2]
कहीं बादशाह इस से दरवेश हैं
कहीं इससे दरवेश दिलरेश[3] हैं
लिया काह[4] का कोह[5] से कीं[6] कहीं
मिलाये कहीं आसमानो - ज़मीं
कहीं पड़ गये इसे फ़ितने फ़साद
रहे ज़ेरे - शमशीर[7] हद से ज़ियाद
हुए इश्क़ में ज़ुहद-केशां[8] खराब
रहे दिल शिकस्ता परीशां खराब
मुसलमां हुए इश्क़ में बरहमन
गये काबे को छोड़ दीने - कुहन[9]
न सबहा[10] न जुन्नार[11] नै कुफ्रो-दीं
जहाँ सब है इश्क़ और कुछ भी नहीं

१. इच्छाओं का ख़ून करने वाला २. खुशी की महफ़िल ३. दुखी ४. घास ५. पहाड़ ६. बैर ७. तलवार तले ८. कर्मकांडी ९. पुराना धर्म १०. माला ११. जनेऊ

मुहब्बत के साग़र-कश[1] अहले-सलाह[2]
ये बेहोश दारू है इनकी फ़लाह[3]
कोई होश में अपने रहता नहीं
हर इक चुप है, कुछ कोई कहता नहीं
यही इश्क़ जिससे कि हासिल है काम
यही इश्क़ है जिससे निकला है नाम
इसी इश्क़ से रू-सियह[4] रू-सफ़ेद[5]
रखें इश्क़ से ना-उमेदां उमेद
यही इश्क़ है अक़्दए-दिल[6] है यह
यही इश्क़ हल्लाले-मुश्किल[7] है यह
कहीं इसको लड़ने से पाया मुआफ़
कहीं इसने मारे हैं मैदान साफ़
कहीं मोमिनाना[8] इसे दर्दे-दीं[9]
कहीं काफ़िराना हुआ बे-यक़ीं
ग़रज़ इश्क़ है तुर्फ़ा नैरंग-साज़[10]
कहीं नाज़ यकसर कहीं है नियाज़[11]

---

१. शराबी २. परहेज़गार ३. बेहतरी ४. बदनाम ५. नेकनाम ६. दिल की गांठ ७. मुश्किल हल करने वाला ८. धर्म-प्रेमियों की तरह ९. धर्म का ख़याल १० जादूगर ११. आत्म-निवेदन

दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No.
15/90	182		
1/92	95/P		
1/92	292/P		
[illegible] 1994	282/J		
DEC 1998	176.5		